बोध कथा काव्य कौमुदी

लेखक
मोतीलाल सुराना
१/१, महेशनगर, इन्दौर

प्रकाशक
श्री जे. एल. जैनी ट्रस्ट
९/१, न्यू पलासिया, इन्दौर

श्री वीर नि. सं. २५०७ सन् १९८१

मूल्य १-५०] [१००० प्रति

काव्य कौमुदी

लेखक

मोतीलाल सुराना

१/१, महेशनगर, इन्दौर

प्रकाशक

श्री जे. एल. जैनी ट्रस्ट

१/१, न्यू पलासिया, इन्दौर

श्री वीर नि. सं. २५०७ सन् १९८१

मूल्य १-५०] [१००० प्रति

प्रकाशकीय

हमारे जे. एल. जैनी ट्रस्ट इन्दोर ने लेखक की 'बोध कथा संग्रह, प्रकाशित कराई थी। भारत भर से पुस्तक की बहुत मांग रही। अतः नई तथा पहले की कहानियों एवं कविता की यह दूसरी पुस्तक "बोध कथा काव्य कौमुदी" प्रकाशित की जा रही है। इसके लेखक श्री मोतीलालजी सुराना सिद्ध हस्त लेखक हैं और उनकी ऐसी छोटी-छोटी कहानियों की पुस्तके पहिले भी प्रकाशित हो चुकी है जो बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई है।

हमारे ट्रस्ट का उद्देश्य 'जैन धर्म का प्रचार व प्रसार मानव कल्याण हेतु है। यदि इस पुस्तक के पठन पाठन से बाल युवा अथवा वृद्ध स्त्री-पुरुष अपने संस्कार सुधार सकेंगे तो हमारा प्रयास सफल हो जावेगा। ऐसी आशा है।

शिरोमणीचन्द्र जैन (अध्यक्ष)
९१ न्यू पलासिया
इन्दोर (म. प्र.)

मुरली मनोहर जैन (ट्रस्टी)
चन्द्रप्रकाश जैन (ट्रस्टी)
श्री जे. एल. जैनी ट्रस्ट

निवेदन

पूज्य सन्त महात्माओं से जिनवाणी सुनने का मुझे सुअवसर मिलता रहा तथा धार्मिक वातावरण में रहने की सस्कृति पूज्य पिताजी हेमराजजी से विरासत में मिली थी। समय-समय पर बोध कथाएं तथा कविताएं लिखने की प्ररणा उसी वातावरण का फल है। छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कथाओं को व काव्यों को जैन तथा अजैन पत्र पत्रिकाओं ने समय-समय पर प्रकाशित कर मेरे उत्साह को द्विगुणित किया। मैं लिखता गया और अब तो इनकी संख्या हजारों में पहुंच गई। गुरुजनों की यह इच्छा रही कि इन्हें या इनमें से कुछ चुनी हुई बोध कथाएं व काव्य पुस्तकाकार में प्रकाशित हो। हर्ष का विषय है कि यह बात पुनः साकार हो रही है।

काव्य व कहानियों की अच्छाई का श्रेय जिनवाणी को है। तथा त्रुटियों का उत्तरदायित्व मेरा है।

मोतीलाल सुराना
१११ महेशनगर, इन्दौर
फोन : ३८८६८

प्रकाशकीय

हमारे जे. एल. जैनी ट्रस्ट इन्दोर ने लेखक की 'बोध कथा संग्रह' प्रकाशित कराई थी। भारत भर से पुस्तक की बहुत मांग रही। अतः नई तथा पहले की कहानियों एवं कविता की यह दूसरी पुस्तक "बोध कथा काव्य कौमुदी" प्रकाशित की जा रही है। इसके लेखक श्री मोतीलालजी सुराना सिद्द हस्त लेखक हैं और उनकी ऐसी छोटी-छोटी कहानियों की पुस्तके पहिले भी प्रकाशित हो चुकी है जो बड़ी उपयोगी सिद्द हुई है।

हमारे ट्रस्ट का उद्देश्य 'जैन धर्म का प्रचार व प्रसार मानव कल्याण हेतु है। यदि इस पुस्तक के पठन पाठन से बाल युवा अथवा वृद्ध स्त्री-पुरुष अपने संस्कार सुधार सकेंगे तो हमारा प्रयास सफल हो जावेगा। ऐसी आशा है।

शिरोमणीचन्द्र जैन (अध्यक्ष)
९ १ न्यू पलासिया
इन्दोर (म. प्र.)

मुरली मनोहर जैन (ट्रस्टी)
चन्द्रप्रकाश जैन (ट्रस्टी)
श्री जे. एल. जैनी ट्रस्ट

निवेदन

पूज्य सन्त महात्माओं से जिनवाणी सुनने का मुझे सुअवसर मिलता रहा तथा धार्मिक वातावरण में रहने की सस्कृति पूज्य पिताजी हेमराजजी से विरासत में मिली थी। समय-समय पर बोध कथाएं तथा कविताएं लिखने की प्रेरणा उसी वातावरण का फल है। छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कथाओं को व काव्यों को जैन तथा अजैन पत्र पत्रिकाओं ने समय-समय पर प्रकाशित कर मेरे उत्साह को द्विगुणित किया। मैं लिखता गया और अब तो इनकी संख्या हजारों में पहुंच गई। गुरुजनों की यह इच्छा रही कि इन्हें या इनमें से कुछ चुनी हुई बोध कथाएं व काव्य पुस्तकाकार में प्रकाशित हो। हर्ष का विषय है कि यह बात पुनः साकार हो रही है।

काव्य व कहानियों की अच्छाई का श्रेय जिनवाणी को है। तथा त्रुटियों का उत्तरदायित्व मेरा है।

मोतीलाल सुराना
फोन : ३८८६८
१११ महेशनगर, इन्दौर

राय बहादुर श्री जगमंदरलालजी जैनी

एम. ए., एम. आर. ए. एस., बार. एट. ला. एडवोकेट, इलाहाबाद हाईकोर्ट एवं जज हाईकोर्ट, इन्दौर की संक्षिप्त जीवनी

श्री जगमंदरलालजी जैनी का जन्म सहारनपुर (यू. पी.) के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था इनके दादाजी सुखरायजी बैंकर का कार्य करते थे।

श्री जगमंदरलालजी जैनी के पिता का नाम लाला पन्नालालजी था। श्री जैनी साहब का जन्म ३० अप्रेल सन १८८१ को हुआ था। ये प्रारंभ से ही बड़े परिश्रमी, बुद्धिमान और तेजस्वी थे। तथा परीक्षा में सर्दैव प्रथमोत्तीर्ण हुए शिक्षणकाल में विक्टोरिया जुबिली मेडल भी मिला था।

अक्टूबर सन १९०९ में इन्होंने एक्सटर कालेज, इंग्लैंड में प्रवेश प्राप्त किया और आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के बी. सी. लेक्चर्स में शामिल हुए। जून सन १९०९ में इन्होंने बेरिस्टर की परीक्षा पास की।

जब ये मार्च सन १९१० में हिन्दुस्थान लौटे तो बम्बई, मैसूर बंगाल और यू. पी. के प्रांतों के जैनियों नें इनका बड़ा स्वागत किया।

१२ दिसम्बर, सन १९१४ को इन्दौर में हाईकोर्ट जज की पोस्ट पर इनकी नियुक्ति हुई।

इन्होंने सन १९०४ से सन १५ तक 'इंग्लिश जैन गजट' का सफल सम्पादन किया था।

सन १९०९ में इन्होंने इग्लैंड में जैन लिटररी सोसाइटी लदन की तथा सन १९१३ को इन्होंने लदन में महावीर ब्रदरहुड अथव युनिवर्सल फ्रेट्ररनिटी की स्थापना की।

राय बहादुर श्री जगमंदरलालजी जैनी

एम. ए., एम. आर. ए. एस., बार. एट. ला. एडवोकेट, इलाहाबाद हाईकोर्ट एवं जज हाईकोर्ट, इन्दौर की संक्षिप्त जीवनी

श्री जगमंदरलालजी जैनी का जन्म सहारनपुर (यू. पी.) के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था इनके दादाजी सुखरायजी बैंकर का कार्य करते थे।

श्री जगमंदरलालजी जैनी के पिता का नाम लाला पन्नालालजी था। श्री जैनी साहब का जन्म ३० अप्रेल सन १८८१ को हुआ था। ये प्रारंभ से ही बड़े परिश्रमी, बुद्धिमान और तेजस्वी थे। तथा परीक्षा में सदैव प्रथमोतीर्ण हुए शिक्षणकाल में विक्टोरिया जुबिली मेडल भी मिला था।

अक्टूबर सन १९०९ में इन्होंने एक्सटर कालेज, इंग्लैंड में प्रवेश प्राप्त किया और आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के बी. सी. लेक्चर्स में शामिल हुए। जून सन १९०९ में इन्होंने बेरिस्टर की परीक्षा पास की।

जब ये मार्च सन १९१० में हिन्दुस्थान लौटे तो बम्बई, मैसूर बंगाल और यू. पी. के प्रांतों के जैनियों ने इनका बड़ा स्वागत किया।

१२ दिसम्बर, सन १९१४ को इन्दौर में हाइकोर्ट जज की पोस्ट पर इनकी नियुक्ति हुई।

इन्होंने सन १९०४ से सन १२ तक 'इंग्लिश जैन गजट' का सफल सम्पादन किया था।

सन १९०९ में इन्होंने इंग्लैंड में जैन लिटररी सोसाइटी लंदन की तथा सन १९१३ को इन्होंने लंदन में महावीर ब्रदरहुड अथवा युनिवर्सल फ्रेटरनिटी की स्थापना की।

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

करमचंद और चालाक आदमी

करमचंद बड़ा सीधा एवं भोला व्यापारी था। वह जैसा चीज खरीदता वैसे पैसे देता। यदि कोई सस्ती चीज देने आता तो उस हिसाब से पैसे देता तथा यदि कोई सोना-चांदी बेचने आता तो उसे उस हिसाब से चुकारा करता। किसी के साथ धोखा या पक्षपात नहीं करता। तराजू से पूरा तोलकर लेना-देना इस बाबद करमचंद प्रसिद्ध था। यही हाल उसका ग्राहक के साथ भी था। वह जो कुछ भी लेता उससे पैसे सही हिसाब से लेता।

एक बार जब करमचंद कहीं जा रहा था तो रास्ते में उसे एक आदमी मिला जो बड़ा चालाक था। करमचंद को भोला भाला समझकर उसने उसे ठगने की चाल चली। बोला- रास्ता आसानी से कट जावे इसलिये तुम मुझसे प्रश्न पूछो और मैं जवाब दूं तथा मैं पूछू और तुम जवाब दो। करमचंद ने हाँ कर ली तो वह आदमी बोला—जो जवाब न दे सकेगा उसे दस रुपये देना होंगे। यह सुनकर करमचंद बोला। भाई तुम तो बड़े विद्वान हो और मैं तो निपट अनाड़ी। ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हारे प्रश्न का जवाब दे सकूं।

इस पर वह चालाक आदमी बोला अच्छा तुम्हें रियायत कर देते हैं—तुम जवाब न दे सको तो दस रुपये देना और मैं जवाब न दे सकूंगा तो बीस रुपये तुम्हें दूंगा। फिर तो ठीक है न ? इसके बाद चालाक आदमी ने करमचंद से प्रश्न पूछने को कहा। करमचंद बोला—उस जानवर का नाम बताओ जिसके तीन आंख, तीन सींग नौ पांव और तीन पूंछ है। उस आदमी को इसका जवाब न आया अतः उसने बीस रुपये करमचंद को देते हुए कहा—बताओ वह जानवर कौन है ? इस पर करमचंद

करमचंद और चालाक आदमी

करमचंद बड़ा सीधा एवं भोला व्यापारी था। वह जैसी चीज खरीदता वैसे पैसे देता। यदि कोई सस्ती चीज देने आता तो उस हिसाब से पैसे देता तथा यदि कोई सोना-चांदी बेचने आता तो उसे उस हिसाब से चुकारा करता। किसी के साथ धोखा या पक्षपात नहीं करता। तराजू से पूरा तोलकर लेना-देना इस बाबद करमचंद प्रसिद्ध था। यही हाल उसका ग्राहक के साथ भी था। वह जो कुछ भी लेता उससे पैसे सही हिसाब से लेता।

एक बार जब करमचंद कहीं जा रहा था तो रास्ते में उसे एक आदमी मिला जो बड़ा चालाक था। करमचंद को भोला भाला समझकर उसने उसे ठगने की चाल चली। बोला– रास्ता आसानी से कट जावे इसलिये तुम मुझसे प्रश्न पूछो और मैं जवाब दूं तथा मैं पूछूं और तुम जवाब दो। करमचंद ने हाँ कर ली तो वह आदमी बोला—जो जवाब न दे सकेगा उसे दस रुपये देना होंगे। यह सुनकर करमचंद बोला भाई तुम तो बड़े विद्वान हो और मैं तो निपट अनाड़ी। ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हारे प्रश्न का जवाब दे सकूं।

इस पर वह चालाक आदमी बोला अच्छा तुम्हें रियायत कर देते हैं—तुम जवाब न दे सको तो दस रुपये देना और मैं जवाब न दे सकूंगा तो बीस रुपये तुम्हें दूंगा। फिर तो ठीक है न? इसके बाद चालाक आदमी ने करमचंद से प्रश्न पूछने को कहा। करमचंद बोला—उस जानवर का नाम बताओ जिसके तीन आंख, तीन सींग नौ पांव और तीन पूंछ है। उस आदमी को इसका जवाब न आया अतः उसने बीस रुपये करमचंद को देते हुए कहा—बताओ वह जानवर कौन है? इस पर करमचंद

चश्मा नदारद

साहब होटल में गये। मेज पर से मेनू उठाया। जेब में चश्मे के लिये हाथ डाला तो चश्मा नदारद, घर ही भूल आये थे। बेरा से बोले, मेनू पढ़कर बताओ आज क्या-क्या तैयार है? सर, मैं जबानी ही बता देता हूं, बैरा बोला तो साहब नाराज हो गये। बोले—मेनू पढ़कर बताओ।

बैरा बोला—हुजूर, आपकी तरह मैं भी पढ़ा लिखा नहीं हूं।

हमारे पास भी यदि धर्म, ज्ञान रूपी चश्मा नहीं है तो हम चाहे लाट साहब ही क्यों न हो, हम अज्ञानी की श्रेणी में ही आयेंगे।

अज्ञानी की आँख खुली

राजा शालिवाहन जलक्रीड़ा करते समय रानी चन्द्रलेखा पर पानी उछाल रहा था तो वह संस्कृत भाषा में बोली मुझे जुकाम है सर्दी लग रही है। मुझ पर कृपा कर पानी मत फेंको। रानी ने पानी के लिये मोदक शब्द का उपयोग किया तो राजा समझे नहीं। नौकर को बुलाकर लड्डू का एक थाल रानी के सामने कर दिया तो रानी को हंसी आ गई। जब असली बात का पता लगा तो राजा को अपने अज्ञान पर शर्म महसूस हुई। ज्ञान प्राप्त करने की मन में ठानकर राजा एकान्त में चला गया तथा वर्षों तक स्वाध्याय एवं तप में लीन रहा। सतत अभ्यास के कारण ज्ञान का सूरज निकला राजा एक बहुत बड़ा विद्वान बन गया व कई ग्रन्थों की रचना की।

चश्मा नदारद

साहब होटल में गये। मेज पर से मेनू उठाया। जेब में चश्मे के लिये हाथ डाला तो चश्मा नदारद, घर ही भूल आये थे। बैरा से बोले, मेनू पढ़कर बताओ आज क्या-क्या तैयार है ? सर, मैं जबानी ही बता देता हूं. बैरा बोला तो साहब नाराज हो गये। बोले--मैनू पढ़कर बताओ।

बैरा बोला—हुजूर, आपकी तरह मैं भी पढ़ा लिखा नहीं हूं।

हमारे पास भी यदि धर्म, ज्ञान रूपी चश्मा नहीं है तो हम चाहे लाट साहब ही क्यों न हो, हम अज्ञानी की श्रेणी में ही आयेंगे।

अज्ञानी की आँख खुली

राजा शालिवाहन जलक्रीड़ा करते समय रानी चन्द्रलेखा पर पानी उछाल रहा था तो वह संस्कृत भाषा में बोली मुझे जुकाम है सर्दी लग रही है। मुझ पर कृपा कर पानी मत फेंको। रानी ने पानी के लिये मोदक शब्द का उपयोग किया तो राजा समझे नहीं। नौकर को बुलाकर लड्डू का एक थाल रानी के सामने कर दिया तो रानी को हंसी आ गई। जब असली बात का पता लगा तो राजा को अपने अज्ञान पर शर्म महसूस हुई। ज्ञान प्राप्त करने की मन में ठानकर राजा एकान्त में चला गया तथा वर्षों तक स्वाध्याय एवं तप मे लीन रहा। सतत अभ्यास के कारण ज्ञान का सूरज निकला राजा एक बहुत बड़ा विद्वान बन गया व कई ग्रन्थों की रचना की।

साथ जो कि बहादुरी के लिये प्रसिद्ध हो गया था राजकुमारी कामलता का विवाह हो गया । उसी फूलां ने कालान्तर में कच्छ पर विजय प्राप्त की।

शर्म को शर्म लगती है

आदेश या सलाह से क्या मौन का वजन कम है ? महामंत्री सान्तु ने देखा कि बाग में एक साधु वेश्या के कंधे पर हाथ रखे खड़ा है। महामंत्री कुछ क्षण उसे अपलक देखते रहे तथा वहां से रवाना हो गये ।

साधु को बड़ी लज्जा आई । हेमचन्द सुरीश्वरजी महात्मा के पास जाकर अपनी गलती के लिये पश्चाताप किया तथा वर्षों तक जंगल में जाकर अपने पाप के नाश के लिये तप आराधना किया। साधु का शरीर काला हो गया धूप से और कृष हो गया भूख प्यास से जब उधर से सान्तु निकले तो इस साधु को देख उन्हें आश्चर्य हुआ ।

पूछा आपके गुरू कौन है । तो साधु ने सविनय जवाब दिया महामत्री पहचाना नहीं ? मेरे गुरू तो आप है ? आपके मौन उपदेश ने मुझे खोट रहित सोना बनने के लिये प्रेरणा दी थी ।

विपक्ष का वकील कषाय

न्यायाधीश के सामने जब छोटासा बालक गवाह के रूप में खड़ा हुआ तो विपक्ष का वकील मन ही मन बड़ा खुश हुआ । सोचा इसे तो मैं बहुत जल्दी परास्त कर दूंगा बालक को न्यायाधीश ने पुछा क्या तुम्हे यहां कुछ सीखा कर भेजा गया है ? विपक्ष का वकील बीच ही में बोल पड़ा मीलार्ड मैं त पहले ही समझ गया था कि इसे इसके बापने अवश्य कुछ पट्टी

साथ जो कि बहादुरी के लिये प्रसिद्ध हो गया था राजकुमारी कामलता का विवाह हो गया । उसी फूलां ने कालान्तर में कच्छ पर विजय प्राप्त की।

शर्म को शर्म लगती है

आदेश या सलाह से क्या मौन का वजन कम है ? महामंत्री सान्तु ने देखा कि बाग में एक साधु वैश्या के कंधे पर हाथ रखे खड़ा है। महामंत्री कुछ क्षण उसे अपलक देखते रहे तथा वहां से रवाना हो गये।

साधु को बड़ी लज्जा आई। हेमचन्द सुरीश्वरजी महात्मा के पास जाकर अपनी गलती के लिये पश्चाताप किया तथा वर्षों तक जंगल में जाकर अपने पाप के नाश के लिये तप आराधना किया। साधु का शरीर काला हो गया धूप से और कृष हो गया भूख प्यास से जब उधर से सान्तु निकले तो इस साधु को देख उन्हें आश्चर्य हुआ।

पूछा आपके गुरू कौन है। तो साधु ने सविनय जवाब दिया महामत्री पहचाना नहीं ? मेरे गुरू तो आप है ? आपके मौन उपदेश ने मुझे खोट रहित सोना बनने के लिये प्रेरणा दी थी।

विपक्ष का वकील कषाय

न्यायाधीश के सामने जब छोटासा बालक गवाह के रूप में खड़ा हुआ तो विपक्ष का वकील मन ही मन बड़ा खुश हुआ। सोचा इसे तो मैं बहुत जल्दी परास्त कर दूंगा बालक को न्यायाधीश ने पुछा क्या तुम्हे यहां कुछ सीखा कर भेजा गया है ? विपक्ष का वकील बीच ही में बोल पड़ा मीलार्ड मैं त पहले ही समझ गया था कि इसे इसके बापने अवश्य कुछ पट्टी

देहश्चितायाम् परलोक मार्ग।
कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

'काहे गुमान करे रसिया?'

विशाल वृक्ष की छाया में पले उस छोटे पौधे को उदास देखकर मैं सहज ही पूछ बैठा क्यों क्या बात है? न तो तुम वाटिका के शून्य पौधे की तरह प्रफुल्लित दिखाई देते हो, न तुम हंसते हो तुममें उत्साह भी नहीं के बराबर है। आखिर बात क्या है? जीवित हो उस चिराग की तरह जो जलता है पर रोशनी नहीं दे रहा है।

पौधे ने कहा आहिस्ता बोलो बड़ा वृक्ष सुन लेगा तो तुम्हारी तो कुछ नहीं मेरी हड्डी पसली तोड़ देगा। कहते-कहते पौधा सिसकियां भरकर रोने लगा। उसकी आंखों से अविरल अश्रुधारा बहते मुझसे देखी न गई। मैंने पास जाकर उसकी पीठ पर हाथ फेरा। उसे सहलाते हुए कहा। धैर्य रखो हिम्मत न हारो। एक न एक दिन यह काली घटा भी नष्ट हो जायगी। जिन्दगी में फिर से अच्छे दिन आ सकते हैं।

मैंने देखा मेरी तसल्ली से वह सम्भल गया है। मैंने कहा तुम मुझे अपनी व्यथा बताओ। हो सकता है मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।

मेरे और करीब आ जाओ। पौधे ने धीरे-धीरे कहा मेरी व्यथा सुनकर क्या करोगे तुम्हें भी वेदना ही होगी और तुम कर भी क्या सकोगे। पर अपना दिल हलका करने के लिये तुम्हें संक्षेप में कुछ बतलाता हूं।

पौधा बोला यह जो बड़ा वृक्ष देखते हो न?

देहश्चितायाम् परलोक मार्ग।
कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

'काहे गुमान करे रसिया?'

विशाल वृक्ष की छाया में पले उस छोटे पौधे को उदास देखकर मैं सहज ही पूछ बैठा क्यों क्या बात है ? न तो तुम वाटिका के शून्य पौधे की तरह प्रफुल्लित दिखाई देते हो, न तुम हंसते हो तुममें उत्साह भी नहीं के बराबर है। आखिर बात क्या है ? जीवित हो उस चिराग की तरह जो जलता है पर रोशनी नहीं दे रहा है।

पौधे ने कहा आहिस्ता बोलों बड़ा वृक्ष सुन लेगा तो तुम्हारी तो कुछ नहीं मेरी हड्डी पसली तोड़ देगा। कहते-कहते पौधा सिसकियां भरकर रोने लगा। उसकी आंखों से अविरल अश्रुधारा बहते मुझसे देखी न गई। मैंने पास जाकर उसकी पीठ पर हाथ फेरा। उसे सहलाते हुए कहा। धैर्य रखो हिम्मत न हारो। एक न एक दिन यह काली घटा भी नष्ट हो जायगी। जिन्दगी में फिर से अच्छे दिन आ सकते हैं।

मैंने देखा मेरी तसल्ली से वह सम्भल गया है। मैंने कहा तुम मुझे अपनी व्यथा बताओ। हो सकता है मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।

मेरे और करीब आ जाओ। पौधे ने धीरे-धीरे कहा मेरी व्यथा सुनकर क्या करोगे तुम्हें भी वेदना ही होगी और तुम कर भी क्या सकोगे। पर अपना दिल हलका करने के लिये तुम्हें संक्षेप में कुछ बतलाता हूं।

पौधा बोला यह जो बड़ा वृक्ष देखते हो न ?

पौधे ने कुछ देर तक सोचकर कहा मुझे स्वीकार है और दूसरे दिन मैंने वहां व्यवस्था कर दी। जाते, जाते मैंने बड़े वृक्ष से कहा 'कहो गुमान कर लिया ?'

मौत को धोखा

मूर्तिकार ने जब अपने पड़ोसी को दम तोड़ते देखा तो वह व्याकुल हो गया। इसलिये नहीं कि एक अच्छे साथी का साथ छूट रहा है, पर इस विचार से कि एक दिन मौत मुझे भी इसी प्रकार ले जावेगी।

मूर्तिकार ने गुरु से पूछा मेरी मूर्तियों में अभी तक सजीव जैसा रूप नहीं आता है क्या ?

लगातार परिश्रम से [illegible] कला ऐसी निखर जावेगी कि यदि तुम तुम्हारी भी मूर्ति बनाओगे तो असली नकल का धोखा कई लोग खा जावेंगे, गुरु ने कहा। मूर्तिकार ने सभी काम छोड़कर केवल अपनी मूर्ति बनाने का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया।

लगातार कई महिनों [illegible] की साधना के फलस्वरूप मूर्तिकार उसके ही सरीखी मूर्ति बनाने में सफल हो गया।

मूर्तिकार अपनी सफलता पर अत्यन्त प्रसन्न था। उसने मौत को धोखा देने की योजना बनाई।

अपने ही जैसी ९ मूर्तियां बनाई। उन सबको बनाने में अत्यधिक समय एवं श्रम खर्च किया। प्रत्येक मूर्ति हूबहू मूर्तिकार ही दिखाई पड़ती थी।

मूर्तिकार की आयु समाप्त होने पर यमराज ने मौत को आज्ञा दी कि मूर्तिकार के प्राण ले आवें।

पौधे ने कुछ देर तक सोचकर कहा मुझे स्वीकार है और दूसरे दिन मैंने वहां व्यवस्था कर दी। जाते, जाते मैंने बड़े वृक्ष से कहा 'कहो [illegible] कर [illegible]?'

मौत को धोखा

मूर्तिकार ने जब अपने पड़ोसी को दम तोड़ते देखा तो वह व्याकुल हो गया। इसलिये नहीं कि एक अच्छे साथी का साथ छूट रहा है, पर इस विचार से कि एक दिन मौत मुझे भी इसी प्रकार ले जावेगी।

मूर्तिकार ने गुरु से पूछा मेरी मूर्तियों में अभी तक सजीव जैसा रूप नहीं आता है क्या?

लगातार परिश्रम से [illegible] कला ऐसी निखर जावेगी कि यदि तुम तुम्हारी भी मूर्ति बनाओगे तो असली नकल का धोखा कई लोग खा जावेंगे, गुरु ने कहा। मूर्तिकार ने सब काम छोड़कर केवल अपनी मूर्ति बनाने का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया।

लगातार कई महिनों [illegible] की साधना के फलस्वरूप मूर्तिकार उसके ही सरीखी मूर्ति बनाने में सफल हो गया।

मूर्तिकार अपनी सफलता पर अत्यन्त प्रसन्न था उसने मौत को धोखा देने की योजना बनाई।

अपने ही जैसी ९ मूर्तियां बनाई। उन सबको बनाने में अत्यधिक समय एवं श्रम खर्च किया। प्रत्येक मूर्ति हूबहू मूर्तिकार सी दिखाई पड़ती थी।

मूर्तिकार की आयु समाप्त होने पर यमराज ने मौत को आज्ञा दी कि मूर्तिकार के प्राण ले आवें।

समझदार लोग क्रोध आदि दुर्गुणों की आग को विनय, सादगी सरलता संतोष आदि सद्‌गुणरूपी पानी से शांत करते हैं, पर ना समझ लोग उस अज्ञानी बालक की तरह बढ़ते हुए दुर्गुणों को हर्ष का विषय मानते हैं।

२ पांचा का खेल

पाठशाला की रविवार की छुट्टी थी, छोटी लडकियां मैदान में से कुछ छोटे मोटे पत्थर उठाकर लाईं व सामने के आंगन में बैठकर पाँचे खेलने लगीं।

कुछ देर तक तो खेलती रहीं पर बाद में एक लडकी ने दूसरी से कहा कि तेरा दांव चला गया है पांचा (पछेटा) हिल गया था। दूसरा बाली—तू झूठ कहती है। दानों आपस में झगड़ने लगी। पहली लड़की ने दूसरी लड़की से सब पांचे छीनना चाहा पर उसे केवल दो ही पांचे हाथ लगे। अब न तो पहली लड़की दो पांचे से खेल सकती थी, न दूसरी बाकी पांचे से। पहली लड़की ने दूसरी को गाली दी, तो दूसरी ने पहली को कहा—तेरा बाप मर जावे, तेरी मां मर जावे…। इन दोनों का झगड़ा चल ही रहा था कि कमरे में से दानों की माता ने आवाज लगाई—चलो रोटी खालो रोटी बन गई। दोनों ने अपने अपने पास के पांचे सामने मैदान में फेंक दिये और सब वहीं छोडकर अपने अपने कमरों में चल दी।

ऊपर की वार्ता है तो बड़ी छोटी सी पर है शिक्षाप्रद। क्या संसार की यही दशा नहीं है? साथ तो कुछ लाया नहीं था पर यहीं से 'कौड़ी कौड़ी माया जोडी' के अनुसार सब कुछ इकट्ठा करता है। फिर धन के लिये लड़ते हैं और जब मौत आकर बुलाती है तो सब कुछ यहीं छोड़कर चले जाते हैं। जिसे जिंदगी भर मेरा कहा वह सब यहीं रह जाता है।

समझदार लोग क्रोध आदि दुर्गुणों की आग को विनय, सादगी सरलता संतोष आदि सद्गुणरूपी पानी से शांत करते हैं, पर ना समझ लोग उस अज्ञानी वालक की तरह बढ़ते हुए दुर्गुणों को हर्ष का विषय मानते हैं।

२ पांचा का खेल

पाठशाला की रविवार की छुट्टी थी, छोटी लडकियां मैदान में से कुछ छोटे मोटे पत्थर उठाकर लाईं व सामने के आंगन में वैठकर पाँचे खेलने लगीं।

कुछ देर तक तो खेलती रहीं पर वाद में एक लडकी ने दूसरी से कहा कि तेरा दांव चला गया है पांचा (पछेटा) हिल गया था। दूसरा वाली—तू झूठ कहती है। दानों आपस में झगड़ने लगी। पहली लड़की ने दूसरी लड़की से सव पांचे छीनना चाहा पर उसे केवल दो ही पांचे हाथ लगे। अव न तो पहली लड़की दो पांचे से खेल सकती थी, न दूसरी वाकी पांचे से। पहली लड़की ने दूसरी को गाली दी, तो दूसरी ने पहली को कहा—तेरा वाप मर जावे, तेरी मां मर जावे…। इन दोनों का झगड़ा चल ही रहा था कि कमरे में से दानों की माता ने आवाज लगाई—चलो रोटी खालो रोटी वन गई। दोनों ने अपने अपने पास के पांचे सामने मैदान में फेंक दिये और सव वहीं छोडकर अपने अपने कमरों में चल दी।

ऊपर की वार्ता है तो बड़ी छोटी सी पर है शिक्षाप्रद। क्या संसार की यही दशा नहीं है? साथ तो कुछ लाया नहीं था पर यहीं से 'कौड़ी कौड़ी माया जाडी' के अनुसार सव कुछ इकट्ठा करता है। फिर धन के लिये लड़ते हैं और जव मौत आकर वुलाती है तो सब कुछ यहीं छाड़कर चले जाते हैं। जिसे जिंदगी भर मेरा कहा वह सव यहीं रह जाता है।

निकले तो सिंह टूट पड़ेगा । इन्होंने गले से जनेऊ निकाला व मंत्र जपकर सिंह पर फेंका । सिंह जलकर राख हो गया । अर्जुन नदी से बाहर निकले, कपड़े पहने तथा घटना को सुनाने के लिये कृष्णजी के पास आये । नमस्कार करने पर, श्रीकृष्ण ने जब आशीर्वाद स्वरूप हाथ ऊपर उठाया तो अर्जुन ने देखा कि वह अंगुठी तो श्री कृष्ण की अंगुली में चमक रही है । अर्जुन को मायावी सिंह की बात को समझने में देर न लगी । अर्जुन तुम्हें राम दुहाई की बात बतलाते हैं श्री कृष्ण ने कहा ।

दोनों ने साधु का वेष बनाया तथा दूर बस्ती में एक बनिये के यहां गये । आगे कृष्णजी थे । उस दुकानदार महाजन से भोजन की याचना की । 'घर पर पधारिये महाराज' कहकर दुकानदार दोनों को सामने वाले मकान में ले गया । वहां दो महिलायें भोजन बना रही थी । सेठ ने दोनों महात्माओं के लिये भोजन बनाने का आदेश दिया तथा दुकान पर ग्राहकों की भीड़ होने से जाने की आज्ञा मांगी । भोजन तैयार हुआ तथा दो थाल परोस कर महात्माजी के सामने लाये गये । हम यजमान के साथ बैठकर ही खाते हैं, अतः सेठजी को बुलाओ— महात्मा के रूप में श्रीकृष्ण बोले ।

सेठजी आये, बोले—हम बाद में प्रसाद पालेंगे आप आरम्भ कीजिये महात्मन् !

पर महात्मा जी मानने वाले कब थे । एक थाली और परोस कर आई तो सेठ बहाना करके कि 'मैं आया महात्माजी, ऊपर एक कमरे में चले गये। कुछ देर तक वापस न आये तो एक महिला तथा बाद में दूसरी महिला उन्हें देखने गई । जब

निकले तो सिंह टूट पड़ेगा । उन्होंने गले से जनेऊ निकाला व मंत्र जपकर सिंह पर फेंका । सिंह जलकर राख हो गया । अर्जुन नदी से बाहर निकले, कपड़े पहने तथा घटना को सुनाने के लिये कृष्णजी के पास आये । नमस्कार करने पर, श्रीकृष्ण ने जब आशीर्वाद स्वरूप हाथ ऊपर उठाया तो अर्जुन ने देखा कि वह अंगूठी तो श्री कृष्ण की अंगुली में चमक रही है । अर्जुन को मायावी सिंह की बात को समझने में देर न लगी । अर्जुन तुम्हें राम दुहाई की बात बतलाते हैं श्री कृष्ण ने कहा।

दोनों ने साधु का वेष बनाया तथा दूर बस्ती में एक बनिये के यहां गये । आगे कृष्णजी थे । उस दुकानदार महाजन से भोजन की याचना की । 'घर पर पधारिये महाराज' कहकर दुकानदार दोनों को सामने वाले मकान में ले गया । वहां दो महिलायें भोजन बना रही थी । सेठ ने दोनों महात्माओं के लिये भोजन बनाने का आदेश दिया तथा दुकान पर ग्राहकों की भीड़ होने से जाने की आज्ञा मांगी । भोजन तैयार हुआ तथा दो थाल परोस कर महात्माजी के सामने लाये गये । हम यजमान के साथ बैठकर ही खाते हैं, अतः सेठजी को बुलाओ— महात्मा के रूप में श्रीकृष्ण बोले ।

सेठजी आये, बोले—हम बाद में प्रसाद पालेंगे आप आरम्भ कीजिये महात्मन् !

पर महात्मा जी मानने वाले कब थे । एक थाली और परोस कर आई तो सेठ बहाना करके कि 'मैं आया महात्माजी, ऊपर एक कमरे में चले गये । कुछ देर तक वापस न आये तो एक महिला तथा बाद में दूसरी महिला उन्हें देखने गई । जब

हुए। घबराहट में बोले-रामदुहाई दोनों को एक समान समझना दोनो के साथ एक समान व्यवहार करना रामदुहाई को मोड़र वाले उस बन्धन के कारण मैं दुकान पर रहता हूं और ये दोनों यहां। मैं इनके हाथ का खाना भी नहीं खाता हूं। जब भगवान ने साथ जीमने की जिद की तो मैं धर्म संकट में पड़ गया। ऊपर जाकर फांसी पर झूल गया। दोन को भी मेरे साथ मृत्यु आलिंगन करना अच्छा लगा अतः वे भी फंदा डालकर मर गई।

श्रीकृष्ण जी ने बात काटकर अर्जुन से पूछा—रामदुहाई क्या है यह देख लिया या और कुछ बाकी है

उलट फेर

आदम ने अपना अंतिम समय नजदीक जान पुनः हिदायत दी कि जो चार घड़े बन्द कर रखे गए हैं, उनमें से किसी भी घड़े के पदार्थ का कोई भी सेवन न करे। जो भूलकर भी उस पदार्थ को चखने का प्रयत्न करेगा उसका सर्वनाश हो जावेगा।

बाद मे आने वाली पीढियों ने आदम के फरमान का श्रद्धा के साथ पालन किया तथा जब अन्य पदार्थों के घड़े भी भर कर उस स्थान पर रखने का अवसर आया तो उन चार घड़ों पर नाश शब्द लिख दिया गया। ताकि उन घडों को कोई भूल कर भी हाथ न लगावे, तथा वहां के रहने वालों को सदा यह संकेत मिलता रहे कि इन घडों में जो पदार्थ रखा हुआ है उसके सेवन से सर्वनाश अवश्यम्भावी है।

हजारों वर्ष बीत गये। मनुष्य का मन दिन पर दिन कमजोर होता गया। एक दिन एक आदमी ने यह जानने के लिए

हुए। घबराहट में बोले-रामदुहाई दोनों को एक समान समझना दोनों के साथ एक समान व्यवहार करना रामदुहाई को मोहर वाले उस बन्धन के कारण मैं दुकान पर रहता हूं और ये दोनों यहां। मैं इनके हाथ का खाना भी नहीं खाता हूं। जब भगवान ने साथ जीमने की जिद की तो मैं धर्म संकट में पड़ गया। ऊपर जाकर फांसी पर झूल गया। दोन को भी मेरे साथ मृत्यु आलिंगन करना अच्छा लगा अतः वे भी फंदा डालकर मर गई।

श्रीकृष्ण जी ने नाम काटकर अर्जुन से पूछा—रामदुहाई क्या है यह देख लिया या और कुछ बाकी है

उलट फेर

आदम ने अपना अंतिम समय नजदीक जान पुनः हिदायत दी कि जो चार घड़े बन्द कर रखे गए हैं, उनमें से किसी भी घड़े के पदार्थ का कोई भी सेवन न करे। जो भूलकर भी उस पदार्थ को चखने का प्रयत्न करेगा उसका सर्वनाश हो जावेगा।

बाद मे आने वाली पीढियों ने आदम के फरमान का श्रद्धा के साथ पालन किया तथा जब अन्य पदार्थों के घड़े भी भर कर उस स्थान पर रखने का अवसर आया तो उन चार घड़ों पर नाश शब्द लिख दिया गया। ताकि उन घडों को कोई भूल कर भी हाथ न लगावे, तथा वहां के रहने वालों को सदा यह संकेत मिलता रहे कि इन घडों में जो पदार्थ रखा हुआ है उसके सेवन से सर्वनाश अवश्यम्भावी है।

हजारों वर्ष बीत गये। मनुष्य का मन दिन पर दिन कमजोर होता गया। एक दिन एक आदमी ने यह जानने के लिए

लगाव का थर्मामीटर

वह नित्य पहाड़ पर घूमने जाता था । सवेरे जल्दी उठकर वह चढ़ाई चढ़ता फिर सूर्योदय के दृश्य को देखना । बाद में पानी भरे कुण्ड के किनारे बैठकर पास के वृक्षों पर चहचहाती चिड़ियों की दौड़ भाग को एकटक निहारता । उसने देखा कि एक और कोई नया घुमक्कड़ कुछ दिनों से रोज-रोज पहाड़ पर आता है । आज भी वह आया था और उसके पास आकर कुण्ड के किनारे बैठ गया । बातचीत शुरू करते हुए नये घुमक्कड़ ने पूछा आप रोज–रोज पहाड़ पर आते हैं तो आखिर कुछ कारण तो होगा ? उसने कहा मुझे प्राकृतिक दृश्यों से बड़ा लगाव है उगता हुआ सूरज जब देखता हूं तो मैं सब कुछ भूल जाता हूं ।

बातचीत चालू रखते हुए नये घुमक्कड़ से उसने पूछा और आप किस उद्देश्य से यहां रोज-रोज आते हैं । नये घुमक्कड़ ने कहा मेरी पत्नी ने शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू किया है इसीलिए मैं यहां चला आता हूं । प्रवचनकार महात्मा ने कहा यह तो एक कहानी की बात हुई यहाँ प्रवचन सुनने जो आते हैं वे सब भी वीरवाणी के प्रति श्रद्धा एवं लगाव रखने वाले आते हैं ऐसी बात नहीं । यहां भी कुछ श्रोता तो घर की झंझट से बचने के लिये कुछ आपस में मिलने-जुलने के उद्देश्य से तो कुछ इसलिये आते हैं कि लोग उन्हें यह न कहें कि आप प्रवचन सुनने नहीं आते । पर ये सब उस घुमक्कड़ की श्रेणी में ही आते हैं जो शास्त्रीय संगीत सीखने वाली पत्नी से बचने के लिये पहाड़ पर आता था । मन लगा कर प्रवचन सुनने वाले निश्चित ही वीरवाणी के महत्व को समझते हैं ।

लगाव का थर्मामीटर

वह नित्य पहाड़ पर घूमने जाता था । सवेरे जल्दी उठकर वह चढ़ाई चढ़ता फिर सूर्योदय के दृश्य को देखता । बाद में पानी भरे कुण्ड के किनारे बैठकर पास के वृक्षों पर चहचहाती चिड़ियों की दौड़ भाग को एकटक निहारता । उसने देखा कि एक और कोई नया घुमक्कड़ कुछ दिनों से रोज-रोज पहाड़ पर आता है । आज भी वह आया था और उसके पास आकर कुण्ड के किनारे बैठ गया । बातचीत शुरू करते हुए नये घुमक्कड़ ने पूछा आप रोज-रोज पहाड़ पर आते हैं तो आखिर कुछ कारण तो होगा ? उसने कहा मुझे प्राकृतिक दृश्यों से बड़ा लगाव है उगता हुआ सूरज जब देखता हूं तो मैं सब कुछ भूल जाता हूं ।

बातचीत चालू रखते हुए नये घुमक्कड़ से उसने पूछा और आप किस उद्देश्य से यहां रोज-रोज आते हैं । नये घुमक्कड़ ने कहा मेरी पत्नी ने शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू किया है इसीलिए मैं यहां चला आता हूं । प्रवचनकार महात्मा ने कहा यह तो एक कहानी की बात हुई यहाँ प्रवचन सुनने जो आते हैं वे सब भी वीरवाणी के प्रति श्रद्धा एवं लगाव रखने वाले आते हैं ऐसी बात नहीं । यहां भी कुछ श्रोता तो घर की झंझट से बचने के लिये कुछ आपस में मिलने-जुलने के उद्देश्य से तो कुछ इसलिये आते हैं कि लोग उन्हें यह न कहें कि आप प्रवचन सुनने नहीं आते । पर ये सब उस घुमक्कड़ की श्रेणी में ही आते हैं जो शास्त्रीय संगीत सीखने वाली पत्नी से बचने के लिये पहाड़ पर आता था । मन लगा कर प्रवचन सुनने वाले निश्चित ही वीरवाणी के महत्व को समझते हैं ।

सूचनाएं आती, उस मुताबिक स्टेशन पर सफाई आदि काम नहीं होता। यहां तक कि फाईलों के ढेर इधर-उधर बिखरे रहते, कमरों में ऊपर कोनों में जाले लगे रहते तथा जहां-तहां धूल और कचरा जमा हो जाता।

एक दिन मुआइने के लिये उच्च अधिकारी आया तो वह बहुत नाराज हुआ जब उसने देखा कि स्टेशन मास्टर की टेबल पर धूल की तह जमी हुई है तो उसने स्टेशन मास्टर से कहा कि तुम्हारी टेबल पर इतनी धूल है कि मैं अपनी अंगुली से अपना नाम टेबल पर लिख सकता हूं। स्टेशन मास्टर बड़े भोलेपन से बोला आप जैसे बड़े अधिकारी को ऐसी बचपन की हरकत करना शोभा नहीं देता। हमें भी दुर्लभ मनुष्य का चोला मिला पर प्रमादवश हम भी अपने कर्तव्य और धर्म का पालन नहीं कर रहे हैं। जब भी धर्म गुरु आकर हमसे भव सुधारने बाबद पूछते हैं कि क्या किया तो हमसे सही जवाब नहीं बन पाता। हां उलटे धर्म गुरु एवं धर्मशास्त्र को ही फालतू की चीज बतलाने की कोशिश कर बचकानी हरकत करते है।

मूसल का ठूंठ

शिष्य एकान्त में ऊपर छतपर शास्त्र की गाथा याद करने जाता पर लगातार चार घण्टे तक घोटने पर भी याद नहीं होता। पड़ोस के मकान की छत पर जब यह सब एक लड़के ने देखा तो एक कुण्डे में एक मूसल गाड़ दिया तथा रोज जब शिष्य ऊपर याद करने जाता तब उसे पानी पिलाता और जोर से बोलता मूसल तो ठूंठ का ठूंठ हो रहा इस पर कभी पत्ते फूल आने वाले नहीं। दो चार दिन तक जब शिष्य ने यह

सूचनाएं आती, उस मुताबिक स्टेशन पर सफाई आदि काम नहीं होता। यहां तक कि फाईलों के ढेर इधर-उधर बिखरे रहते, कमरों में ऊपर कोनों में जाले लगे रहते तथा जहां-तहां धूल और कचरा जमा हो जाता।

एक दिन मुआईने के लिये उच्च अधिकारी आया तो वह बहुत नाराज हुआ जब उसने देखा कि स्टेशन मास्टर की टेबल पर धूल की तह जमी हुई है तो उसने स्टेशन मास्टर से कहा कि तुम्हारी टेबल पर इतनी धूल है कि मैं अपनी अंगुली से अपना नाम टेबल पर लिख सकता हूं। स्टेशन मास्टर बड़े भोलेपन से बोला आप जैसे बड़े अधिकारी को ऐसी बचपन की हरकत करना शोभा नहीं देता। हमें भी दुर्लभ मनुष्य का चोला मिला पर प्रमादवश हम भी अपने कर्तव्य और धर्म का पालन नहीं कर रहे हैं। जब भी धर्म गुरु आकर हमसे भव सुधारने बाबद पूछते हैं कि क्या किया तो हमसे सही जवाब नहीं बन पाता। हां उलटे धर्म गुरु एवं धर्मशास्त्र को ही फालतू की चीज बतलाने की कोशिश कर बचकानी हरकत करते हैं।

मूसल का ठूंठ

शिष्य एकान्त में ऊपर छतपर शास्त्र की गाथा याद करने जाता पर लगातार चार घण्टे तक घोटने पर भी याद नहीं होता। पड़ोस के मकान की छत पर जब यह सब एक लड़के ने देखा तो एक कुण्डे में एक मूसल गाड़ दिया तथा रोज जब शिष्य ऊपर याद करने जाता तब उसे पानी पिलाता और जोर से बोलता मूसल तो ठूंठ का ठूंठ हो रहा इस पर कभी पत्ते फूल आने वाले नहीं। दो चार दिन तक जब शिष्य ने यह

पर धर्म गुरू जो अक्षय सुख देने वाला त्याग संयम का मार्ग वतलाते हैं हम उससे सदा दूर-दूर भागते हैं ।

आम की चोरी

राजा श्रेणिक के यहाँ रोज-रोज तो वगीचा झाड़ने मोहन जाता था पर आज उसकी तबियत ठीक न होने से उसकी लड़की मैना वगीचा झाडने गयी थी । जव उसने उस अजीब आम के वृक्ष के बारे में माली से सुना कि इस पर रोज केवल एक आम पकता है और वह राजा के नाश्ते के लिये रोज जाता है तो उसका मन आम खाने के लिए ललचाया । मैना की शादी हो चुकी थी तथा वह गर्भवती थी ।

ससुराल आकर उसने अपने पति से आम खाने की इच्छा प्रकट की । बोली, आप रोज-रोज उस साधु की सेवा करते हो । कम से कम उससे यह विद्या तो सीख आओ जिससे आम हमारे हाथ में आ जाये तथा वहां का चौकीदार हमें पकड़ भी न सके । पत्नी की हट के आगे वह साधु के पास गया तथा अनुनय-विनय के साथ सव बात कही । गर्भवती मैना पर दया लाकर साधु ने उसे वह मन्त्र वतला दिया जिससे बिना पेड़ पर चढ़े आम टपक कर हाथ पर आ जावे । वस फिर क्या था ? मैना के पिता के वदले वह वगीचा झाडने गया तथा मंत्र के वल से पका हुआ आम लाकर मैना को दे दिया । मैना ने चोरी पकड़े जाने के डर से दिन भर आम को छिपा कर रखा तथा रात को आम खाकर गुठली व छिलका झोपड़ी में एक तरफ डाल दिया । पति से बोली, सुबह होते ही गुठली व छिलके को किसी कुंए में दूर जाकर डाल आना ।

इधर वृक्ष पर आम पका न मिलने से राजा ने मंत्री अभय कुमार को चोर पकड़ने का आदेश दिया ।

पर धर्म गुरू जो अक्षय सुख देने वाला त्याग संयम का मार्ग बतलाते हैं हम उससे सदा दूर-दूर भागते हैं।

आम की चोरी

राजा श्रेणिक के यहाँ रोज-रोज तो बगीचा झाड़ने मोहन जाता था पर आज उसकी तबियत ठीक न होने से उसकी लड़की मैना बगीचा झाडने गयी थी। जब उसने उस अजीब आम के वृक्ष के बारे में माली से सुना कि इस पर रोज केवल एक आम पकता है और वह राजा के नाश्ते के लिये रोज जाता है तो उसका मन आम खाने के लिए ललचाया। मैना की शादी हो चुकी थी तथा वह गर्भवती थी।

ससुराल आकर उसने अपने पति से आम खाने की इच्छा प्रकट की। बोली, आप रोज-रोज उस साधु की सेवा करते हो। कम से कम उससे यह विद्या तो सीख आओ जिससे आम हमारे हाथ में आ जाये तथा वहाँ का चौकीदार हमें पकड़ भी न सके। पत्नी की हट के आगे वह साधु के पास गया तथा अनुनय-विनय के साथ सब बात कही। गर्भवती मैना पर दया लाकर साधु ने उसे वह मन्त्र बतला दिया जिससे बिना पेड़ पर चढ़े आम टपक कर हाथ पर आ जावे। बस फिर क्या था ? मैना के पिता के बदले वह बगीचा झाडने गया तथा मंत्र के बल से पका हुआ आम लाकर मैना को दे दिया। मैना ने चोरी पकड़े जाने के डर से दिन भर आम को छिपा कर रखा तथा रात को आम खाकर गुठली व छिलका झोपड़ी में एक तरफ डाल दिया। पति से बोली, सुबह होते ही गुठली व छिलके को किसी कुंए में दूर जाकर डाल आना।

इधर वृक्ष पर आम पका न मिलने से राजा ने मंत्री अभय कुमार को चोर पकड़ने का आदेश दिया।

इस कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि चोरी नहीं करना, सन्त पुरुष की सेवा करने से मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं, सदा सत्य बोलना तथा गुरुजनों का आदर करना चाहिए।

न्यायी राजा

चोड देश के राजा गोवर्धन के यहां मेहमान आये हुए थे। दो दिन ठहरने के बाद जब मेहमान जाने लगे तो रथ में राजकुमार भी चढ़ गया। दो दिन की जान-पहचान में राजकुमार मेहमानों से हिल-मिल गया था। मेहमान पहुंचा कर जब सारथी व राजकुमार रथ लेकर वापस आ रहे थे तब राजकुमार ने हठ करके सारथी से घोड़े की लगाम अपने हाथ में ली तथा रथ हांकने लगा। रथ चलाना तो आता था नहीं राजकुमार ने एक बछड़े पर चढ़ा दिया। बछड़े के मालिक ने राजा के पास जाकर पुकार की कि राजकुमार ने मेरे बछड़े को घायल कर दिया। न्यायप्रिय राजा ने दूसरे दिन राजकुमार को बछड़े की जगह खड़ा कर दिया तथा आप खुद रथ चलाते हुए लाए तथा राजकुमार को रथ के पहिये से कुचल दिया। कुछ दिनों के इलाज के बाद बछड़ा तथा राजकुमार अच्छे हो गये। पर प्रजाजन उस दिन को कभी नहीं भूले जिस दिन न्यायप्रिय राजा गोवर्धन ने लाडले राजकुमार को रथ से कुचला था।

मूर्तियों की उम्र

एक था पंडित नया नया आया था शहर में। पकड़ कर ले गये सिपाही राजा के पास। बोले-हुजूर हमें इस आदमी

इस कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि चोरी नहीं करना, सन्त पुरुष की सेवा करने से मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं, सदा सत्य बोलना तथा गुरुजनों का आदर करना चाहिए।

न्यायी राजा

चोड देश के राजा गोवर्धन के यहां मेहमान आये हुए थे। दो दिन ठहरने के बाद जब मेहमान जाने लगे तो रथ में राजकुमार भी चढ़ गया। दो दिन की जान-पहचान में राजकुमार मेहमानों से हिल-मिल गया था। मेहमान पहुंचा कर जब सारथी व राजकुमार रथ लेकर वापस आ रहे थे तब राजकुमार ने हठ करके सारथी से घोड़े की लगाम अपने हाथ में ली तथा रथ हांकने लगा। रथ चलाना तो आता था नहीं राजकुमार ने एक बछड़े पर चढ़ा दिया। बछड़े के मालिक ने राजा के पास जाकर पुकार की कि राजकुमार ने मेरे बछड़े को घायल कर दिया। न्यायप्रिय राजा ने दूसरे दिन राजकुमार को बछड़े की जगह खड़ा कर दिया तथा आप खुद रथ चलाते हुए लाए तथा राजकुमार को रथ के पहिये से कुचल दिया। कुछ दिनों के इलाज के बाद बछड़ा तथा राजकुमार अच्छे हो गये। पर प्रजाजन उस दिन को कभी नहीं भूले जिस दिन न्यायप्रिय राजा गोवर्धन ने लाडले राजकुमार को रथ से कुचला था।

मूर्तियों की उम्र

एक था पंडित नया नया आया था शहर में। पकड़ कर ले गये सिपाही राजा के पास। बोले-हुजूर हमें इस आदमी

पंडित की बात सुनकर राजा की आंख खुल गयीं। वह अपने लड़के को राजकाज सौंप कर साधु बन गया।

पेट, पैसा और ज्ञान

चार दिन पहले राजा ने दशहरे के दिन मण्डनमिश्र को राज दरबार में बुलाया था पर मण्डन मिश्र नहीं गये। मां से बोले क्या करूंगा मां वहां जाकर। कुछ रुपयों के बदले राजा के गुण गान करने की मेरी इच्छा नहीं होती।

और आज जब घर मे खाने को एक दाना धान भी न था तो मण्डन मिश्र ने से कहा आज उपवास कर लूंगा मां।

और कल ? मां ने पूछा। तो मण्डन मिश्र ने जवाब दिया कि यदि कल घर में अनाज आ गया तो भोजन कर लूगां। नहीं तो ·······?

पर ऐसी गरीबी में भी क्या जीना मां बोली। उसकी आंखे डबडबा गयी थी।

हम ज्ञान के तो श्रीमंत हैं मां मण्डन मिश्र ने कहा। ज्ञानवान को धन-धान्य की चिन्ता नहीं होती। धन-धान्य के श्रीमतों को ज्ञान या ज्ञानी की चिन्ता नहीं होती यह अलग बात है मां।

सिद्धांत की बात तो तू जो कहता वह सच है पर मेरी एक आज्ञा तो तुझे माननी पड़ेगी। ममतामयी मां बोली राजा के दिल में तेरे लिये बड़ा सम्मान है। तू एक बार राजा के यहां जरूर जा।

माता के आग्रह और आज्ञा ने मण्डन मिश्र को राज के यहां जाने को तैयार कर दिया।

पंडित की बात सुनकर राजा की आंख खुल गयीं। वह अपने लड़के को राजकाज सौंप कर साधु बन गया।

पेट, पैसा और ज्ञान

चार दिन पहले राजा ने दशहरे के दिन मण्डनमिश्र को राज दरबार में बुलाया था पर मण्डन मिश्र नहीं गये। मां से बोले क्या करूंगा मां वहां जाकर। कुछ रुपयों के बदले राजा के गुण गान करने की मेरी इच्छा नहीं होती।

और आज जब घर मे खाने को एक दाना धान भी न था तो मण्डन मिश्र ने से कहा आज उपवास कर लूंगा मां।

और कल ? मां ने पूछा। तो मण्डन मिश्र ने जवाब दिया कि यदि कल घर में अनाज आ गया तो भोजन कर लूंगा। नहीं तो ·······?

पर ऐसी गरीबी में भी क्या जीना मां बोली। उसकी आँखे डबडबा गयी थी।

हम ज्ञान के तो श्रीमंत हैं मां मण्डन मिश्र ने कहा। ज्ञानवान को धन-धान्य की चिन्ता नहीं होती। धन-धान्य के श्रीमतों को ज्ञान या ज्ञानी की चिन्ता [नहीं होती यह अलग बात है मां।

सिद्धांत की बात तो तू जो कहता वह सच हैं पर मेरी एक आज्ञा तो तुझे माननी पड़ेगी। ममतामयी मां बोली राजा के दिल में तेरे लिये बड़ा सम्मान है। तू एक बार राजा के यहां जरूर जा।

माता के आग्रह और आज्ञा ने मण्डन मिश्र को राज के यहां जाने को तैयार कर दिया।

श्रद्धा का दिखावा

ईद का दिन था। शहर में नये काजी जी आये थे। बादशाह ने दीवानेआम में काजी को नमाज अदा करने के लिये बुलाया। नये काजीजी ने बड़े झटके-खटके के साथ नमाज पढ़ाई। नमाज के बाद हुआ भोज। शहर के कई मोअज्जिज लोग आये थे। बादशाह के सामने खाने बैठे तो सभी ने थोड़ा-थोड़ा खाकर खाना समाप्त कर दिया। बेचारे काजीजी भी भूख दबा कर तथा पूरा पेट भर जाने का दिखावा कर उठ खड़े हुए। घर आकर बेगम से खाना मांगा तो बोली आप तो नमाज पढ़ा कर शाही खाना खाकर आने वाले थे न? सब लोग थोड़ा थोड़ा खाकर उठे तो मुझे भी उठना पड़ा काजीजी ने कहा। और नमाज? बेगम ने पूछा तो बोले—वह झटका खटका दिखाया कि बादशाह ने आज तक ऐसी नमाज न सुनी होगी। नखरे नजाकत और नकली आवाज से मैंने बादशाह को खुश करने की पूरी-पूरी कोशिश की। बादशाह खुश हुआ या नहीं यह तो खुदा जाने पर परवरदिगार तुम पर खुश नहीं हुए तभी तो पेट भर खाना नहीं मिला बेगम ने कहा।

दिखाव की नमाज की बात छोड़ो और फिर से खुदा की इबादत सच्चे दिल से करो बेगम ने कहा तभी खाना मिलेगा यह कह कर बेगम खाना बनाने चली गई।

हम धर्म क्रिया में दिखावे को स्थान नहीं दें। ज्ञान के साथ-साथ सच्ची श्रद्धा से की गई क्रिया लक्ष्य की ओर निश्चित पहुंचाती है।

डाक्टर और वकील

सेठ ने एक लड़के को डाक्टर तथा दूसरे को वकील बनाया। दोनों घर में कमा कर धन लाने लगे। एक दिन सेठ

श्रद्धा का दिखावा

ईद का दिन था। शहर में नये काजी जी आये थे। बादशाह ने दीवानेआम में काजी को नमाज अदा करने के लिये बुलाया। नये काजीजी ने बड़े झटके-खटके के साथ नमाज पढ़ाई। नमाज के बाद हुआ भोज। शहर के कई मोअज्जिज लोग आये थे। बादशाह के सामने खाने बैठे तो सभी ने थोड़ा-थोडा खाकर खाना समाप्त कर दिया। बेचारे काजीजी भी भूख दबा कर तथा पूरा पेट भर जाने का दिखावा कर उठ खड़े हुए। घर आकर बेगम से खाना मांगा तो बोली आप तो नमाज पढ़ा कर शाही खाना खाकर आने वाले थे न? सब लोग थोड़ा थोड़ा खाकर उठे तो मुझे भी उठना पड़ा काजीजी ने कहा। और नमाज? बेगम ने पूछा तो बोले—वह झटका खटका दिखाया कि बादशाह ने आज तक ऐसी नमाज न सुनी होगी। नखरे नजाकत और नकली आवाज से मैंने बादशाह को खुश करने की पूरी-पूरी कोशिश की। बादशाह खुश हुआ या नहीं यह तो खुदा जाने पर परवरदिगार तुम पर खुश नहीं हुए तभी तो पेट भर खाना नहीं मिला बेगम ने कहा।

दिखाव की नमाज की बात छोड़ो और फिर से खुदा की इबादत सच्चे दिल से करो बेगम ने कहा तभी खाना मिलेगा यह कह कर बेगम खाना बनाने चली गई।

हम धर्म क्रिया में दिखावे को स्थान नहीं दें। ज्ञान के साथ-साथ सच्ची श्रद्धा से की गई क्रिया लक्ष्य की ओर निश्चित पहुंचाती है।

डाक्टर और वकील

सेठ ने एक लड़के को डाक्टर तथा दूसरे को वकील बनाया। दोनों घर में कमा कर धन लाने लगे। एक दिन सेठ

और भारी हो गया। स्टेशन पर जाकर वजन तौल आये तथा ऊंचाई और वजन के चार्ट पर सरसरी निगाह डालकर बोले- साला वजन तो बराबर है, अब ऊंचाई बढाऊं तो कैसे ?

मनुष्य भी पाप कर्म से भारी होता जाता है। ज्ञानी गुरु ऊंचाई पर पहुंचने का मार्ग बताते हैं पर उस मार्ग पर चलने की हिम्मत विरले ही करते हैं।

आने का कारण

मानसिक चिकित्सक के दरवाजे पर दो मित्र मिले तो एक ने पूछा, 'तुम आ रहे हो कि जा रहे हो?' 'यह मालूम होता तो यहां क्यों आता।' दूसरे ने जवाब दिया। हम भी संसार में क्यों आये, क्या करना है ? यदि यह नहीं जानते हैं तो हम भी उन दोनों मित्रों जैसे पागल हैं।

बचे खाने का पकवान

आज क्या मेहमान आने वाले हैं या मेरा दिवाला निकालने का इरादा है, सो पांच-सात आदमियों का खाना बना डाला, उसने क्रोधित होते हुए ललकार कर पत्नी को डांटा।

नहीं ऐसी बात नहीं है, पत्नी बोली। बचे हुए खाने की दूसरी-दूसरी चीजें बनाने की विधियां मैंने एक मासिक पत्रिका में पढ़ी हैं, इसलिये मैंने आज ज्यादा खाना पकाया है।

हंसी आती है हमें उसकी पत्नी पर। पर सोच तो यह है कि तपस्या कर उसका अत्यधिक प्रदर्शन करने वाले भी उसी अज्ञानी पत्नी की श्रेणी में आते हैं जो बचे खाने के व्यंजन सीखने के लिए दो की जगह पांच आदमियों का खाना बनाती है।

और भारी हो गया । स्टेशन पर जाकर वजन तौल आये तथा ऊंचाई और वजन के चार्ट पर सरसरी निगाह डालकर बोले-साला वजन तो बराबर है, अब ऊंचाई बढाऊं तो कैसे ?

मनुष्य भी पाप कर्म से भारी होता जाता है । ज्ञानी गुरु ऊंचाई पर पहुंचने का मार्ग बताते हैं पर उस मार्ग पर चलने की हिम्मत विरले ही करते हैं ।

आने का कारण

मानसिक चिकित्सक के दरवाजे पर दो मित्र मिले तो एक ने पूछा, 'तुम आ रहे हो कि जा रहे हो ?' 'यह मालूम होता तो यहां क्यों आता ।' दूसरे ने जवाब दिया । हम भी संसार में क्यों आये, क्या करना है ? यदि यह नहीं जानते हैं तो हम भी उन दोनों मित्रों जैसे पागल हैं ।

बचे खाने का पकवान

आज क्या मेहमान आने वाले हैं या मेरा दिवाला निकालने का इरादा है, सो पांच-सात आदमियों का खाना बना डाला, उसने क्रोधित होते हुए ललकार कर पत्नी को डांटा ।

नहीं ऐसी बात नहीं है, पत्नी बोली । बचे हुए खाने की दूसरी-दूसरी चीजें बनाने की विधियां मैंने एक मासिक पत्रिका में पढ़ी हैं, इसलिये मैंने आज ज्यादा खाना पकाया है ।

हंसी आती है हमें उसकी पत्नी पर । पर सोच तो यह है कि तपस्या कर उसका अत्यधिक प्रदर्शन करने वाले भी उसी अज्ञानी पत्नी की श्रेणी में आते हैं जो बचे खाने के व्यंजन सीखने के लिए दो की जगह पांच आदमियों का खाना बनाती है ।

पास जितने लाख की सम्पत्ति हो वह उतने ही दीपक अपने भवन पर लगाता है। यदि किसी के पास करोड रुपयों की सम्पत्ति हो तो राजा ने मंत्री से पूछा। महाराज वह अपनी हवेली पर कोट्याधिपति के रूप में एक जरी के कपड़े का केशरिया रंग का झंडा लगाता है। दूसरे दिन महाराजा सिद्ध-राज ने ८४ लाख की सम्पत्ति के मालिक सेठ को राज दरबार में बुलवाया। सेठ से राजा ने पूछा आपके पास कितने रुपयों की सम्पत्ति है। राजन, सेठ ने कहा ८४ लाख रुपयों की सम्पति आपकी कृपा से मेरे पास है। क्या आप सम्पत्ति के स्थित रहने वाली अचल मानते हो या""""राजा पूछ ही रहे थे तो सेठ ने कहा नहीं महाराज। सम्पत्ति सदैव अस्थिर एवं विनाशवान ही रही है। राजा ने पुनः पूछा"""" तो फिर यह किस काम की ? जरूरत मंद, दीनदुखी बीमार, बेरोजगार के संकट दूर करने के काम की है सेठ ने बड़े विनम्रता के साथ जवाब दिया। सेठ से ऐसा सुनकर राजा बहुत खुश हुवा। तथा खजांची को हुक्म दिया कि खजाने में से सेठ के घर १६ लाख रुपये और भेजो ताकि हमारे देश में करोड़ पति की एक संख्या और बढ़ जावे। यह सम्पत्ति का सदुपयोग जानने वाला नररत्न हैं। उपस्थित दरबारियों ने राजा तथा सेठ का जय जयकार किया। सेठ की हवेली पर जरी का केशरिया झंडा लहराने लगा।

पानी रेत के नीचे

उसे जोर की प्यास लगी थी। वह नदी के यहाँ पहुँचा तो क्या देखता है कि वहां तो रेती ही रेती है। पानी का नाम निशान ही नहीं। वह लौटने लगा तभी एक महात्मा आते

पास जितने लाख की सम्पत्ति हो वह उतने ही दीपक अपने भवन पर लगाता है। यदि किसी के पास करोड रुपयों की सम्पत्ति हो तो राजा ने मंत्री से पूछा। महाराज वह अपनी हवेली पर कोट्याधिपति के रूप में एक जरी के कपड़े का केशरिया रंग का झंडा लगाता है। दूसरे दिन महाराजा सिद्ध-राज ने ८४ लाख की सम्पत्ति के मालिक सेठ को राज दरवार में बुलवाया। सेठ से राजा ने पूछा आपके पास कितने रुपयों की सम्पत्ति है। राजन, सेठ ने कहा ८४ लाख रुपयों की सम्पति आपकी कृपा से मेरे पास है। क्या आप सम्पत्ति के स्थित रहने वाली अचल मानते हो या·······राजा पूछ ही रहे थे तो सेठ ने कहा नहीं महाराज। सम्पत्ति सदैव अस्थिर एवं विनाशवान ही रही है। राजा ने पुनः पूछा······· तो फिर यह किस काम की? जरूरत मंद, दीनदुखी बीमार, वेरोजगार के संकट दूर करने के काम की है सेठ ने वड़े विनम्रता के साथ जवाव दिया। सेठ से ऐसा सुनकर राजा बहुत खुश हुवा। तथा खजांची को हुक्म दिया कि खजाने में से सेठ के घर १६ लाख रुपये और भेजो ताकि हमारे देश में करोड़ पति की एक संख्या और वढ़ जावे। यह सम्पत्ति का सदुपयोग जानने वाला नररत्न हैं। उपस्थित दरबारियों ने राजा तथा सेठ का जय जयकार किया। सेठ की हवेली पर जरी का केशरिया झंडा लहराने लगा।

पानी रेत के नीचे

उसे जोर की प्यास लगी थी। वह नदी के यहाँ पहुँचा तो क्या देखता है कि वहां तो रेती ही रेती है। पानी का नाम निशान ही नहीं। वह लौटने लगा तभी एक महात्मा आते

ईमानदार की पैठ

आर्थिक दृष्टि से उस सेठ को १५०० रुपये पहले ही सौदे में लौटाने पड़े पर अगले वर्ष उसकी ईमानदारी के कारण उसके पास इतने आडर आये जितने शायद दस वर्ष तक नहीं आते।

बात उन दिनों की है जब सबसे अच्छा व्यवसाय जवाहरात का समझा जाता था। दोपहर को १२ बजे के बाद बाजार नियमित चालू होता था और शाम को ४-५ बजे तक सेठ साहूकार तफरी के लिये निकल जाते थे। आजकल तो जवाहरात तो क्या सोना-चांदी के सर्राफी धन्धे को भी अब लोग अच्छा नहीं मानते हैं। सरकारी नियंत्रण और विज्ञानी सोने की चोरा-बढ़ी में कई सर्राफ मिट गये तो श्रम-युक्त व्यवसाय को चाहे वह कैसा भी हो, अब लोग अच्छी नजर से देखने लगे। जवाहरात बेचना और खरीदना, अब कोई खास महत्व नहीं रखता। पर उन दिनों राजे-रजवाड़ों के साथ-साथ विदेशी मेहमान भी हीरे पन्नों की खरीदी का शौक रखते थे तथा इस प्रकार के व्यवसाय में साहुकारों को मुनाफा भी खासा मिलता था।

दुकाने खुल चुकी थी और प्रायः दुकानों पर अभी सेठ लोग नहीं आये थे। एक अमेरिकन ग्राहक एक दुकान पर गया तथा हीरे के लिये मांग की। मुनीमजी ने तीजोरी में से निकाल कर छोटे बड़े कई नग दिखाये तथा कीमतें बतलाई। अमेरिकन ने एक हीरा पसन्द किया तथा उसकी जोड़ का एक और नग मांगा। मुनीमजी ने असमर्थता प्रकट की तो मुनीमजी के कहे

ईमानदार की पैठ

आर्थिक दृष्टि से इस सेठ को १५०० रुपये पहले ही सौदे में लौटाने पड़े पर अगले वर्ष उसकी ईमानदारी के कारण उसके पास इतने आर्डर आये जितने शायद दस वर्ष तक नहीं आते।

बात उन दिनों की है जब सबसे अच्छा व्यवसाय जवाहरात का समझा जाता था। दोपहर को १२ बजे के बाद बाजार नियमित चालू होता था और शाम को ४-५ बजे तक सेठ साहूकार तफरी के लिये निकल जाते थे। आजकल तो जवाहरात तो क्या सोना-चांदी के सर्राफी धन्धे को भी अब लोग अच्छा नहीं मानते हैं। सरकारी नियंत्रण और विलायती सोने की चोरा-चट्टी से कई सर्राफ मिट गये तो श्रम-युक्त व्यवसाय को चाहे वह कैसा भी हो, अब लोग अच्छी नजर से देखने लगे। जवाहरात बेचना और खरीदना, अब कोई खास महत्व नहीं रखता। पर उन दिनों राजे-रजवाड़ों के साथ-साथ विदेशी मेहमान भी हीरे पन्नों की खरीदी का शौक रखते थे तथा इस प्रकार के व्यवसाय में साहुकारों को मुनाफा भी खासा मिलता था।

दुकानें खुल चुकी थी और प्रायः दुकानों पर अभी सेठ लोग नहीं आये थे। एक अमेरिकन ग्राहक एक दुकान पर गया तथा हीरे के लिये मांग की। मुनीमजी ने तिजोरी में से निकाल कर छोटे बड़े कई नग दिखाये तथा कीमतें बतलाई। अमेरिकन ने एक हीरा पसन्द किया तथा उसकी जोड़ का एक और नग मांगा। मुनीमजी ने असमर्थता प्रकट की तो मुनीमजी के कहे

मैं आपकी बात कहने आया हूं सेठजी ने कहा-आप तो आपकी बात सुना रहे हैं। मैंने वह हीरा १८४०) रु. में खरीदा था। मैंने २५ प्रतिशत से अधिक मुनाफा न लेने की प्रतिज्ञा ली हुई है। इस हीरे को बेचने की कीमत २३०० रु. है। पर मुनीमजी ने गलती से ३८०० रु. ले लिये। मैं ये १५०० रु. वापस करने के लिये आया हूं। अमेरिकन ने उस व्यापारी से कहा कि ये रुपये तुम्हें मैं तुम्हारी ईमानदारी के बदले देता हूं पर सेठ ने एक नहीं सुनी तथा वे रुपये अमेरिकन को दे दिये। उस विदेशी ने अपने क्षेत्र में इस भारतीय ईमानदार व्यापारी की खूब प्रशंसा की। नतीजा यह हुआ कि आगामी वर्ष उस व्यापारी के पास इतने आर्डर आये जो शायद उसे आगामी दस वर्ष में भी न मिलते। इस प्रकार वह पेढ़ी उस बाजार में एक प्रमुख पेढ़ी जवाहरात की बन गई।

पूत के लक्षण पालने में

एक सौ से अधिक लोगों का भोज था। मैंने देखा-लड़की ने उसकी मां से दो पूरियां मांगी और दौड़ी-दौडी बाहर जाकर खिलौने बेचने वाली बुढ़िया से एक तराजू ले आई। शक्कर बेचने का ढोंग कर रही थी-शक्कर मेरे से ही लेना, सस्ती दूंगी। तौल में पूरी दूंगी। यह सब देखकर मैं अचम्भे में पड़ गया। चार साल की लड़की, मांगकर पूरी लेना, तराजू लाना पूरी-पूरी तोल कर शक्कर देने की बात कहना, आखिर यह सब क्यों? क्या वह चुपके से बिना पूछे, बिना मांगे दो पूरियां नहीं उठा सकती? क्या वह तराजू की बजाय झुनझुना, पंखा या अन्य खिलौना न खरीद सकती थी? पूरा व पूरा तोलकर देने की बात कहना नन्हीं उम्र में आवश्यक था जब कि वह केवल एक

मैं अपनी बात कहने आया हूं सेठजी ने कहा-आप तो आपकी बात सुना रहे हैं। मैंने वह हीरा १८४०) रु. में खरीदा था। मैंने २५ प्रतिशत से अधिक मुनाफा न लेने की प्रतिज्ञा ली हुई है। इस हीरे को बेचने की कीमत २३०० रु. है। पर मुनीमजी ने गलती से ३८०० रु. ले लिये। मैं ये १५०० रु. वापस करने के लिये आया हूं। अमेरिकन ने उस व्यापारी से कहा कि ये रुपये तुम्हें मैं तुम्हारी ईमानदारी के बदले देता हूं पर सेठ ने एक नहीं सुनी तथा वे रुपये अमेरिकन को दे दिये। उस विदेशी ने अपने क्षेत्र में इस भारतीय ईमानदार व्यापारी की खूब प्रशंसा की। नतीजा यह हुआ कि आगामी वर्ष उस व्यापारी के पास इतने आर्डर आये जो शायद उसे आगामी दस वर्ष में भी न मिलते। इस प्रकार वह पेढ़ी उस बाजार में एक प्रमुख पेढ़ी जवाहरात की बन गई।

पूत के लक्षण पालने में

एक सौ से अधिक लोगों का भोज था। मैंने देखा-लडकी ने उसकी मां से दो पूरियां मांगी और दौड़ी-दौडी बाहर जाकर खिलौने बेचने वाली बुढ़िया से एक तराजू ले आई। शक्कर बेचने का ढोंग कर रही थी-शक्कर मेरे से ही लेना, सस्ती दूंगी। तोल में पूरी दूंगी। यह सब देखकर मैं अचम्भे में पड़ गया। चार साल की लड़की, मांगकर पूरी लेना, तराजू लाना पूरी-पूरी तोल कर शक्कर देने की बात कहना, आखिर यह सब क्यों? क्या वह चुपके से बिना पूछे, बिना मांगे दो पूरियां नहीं उठा सकती? क्या वह तराजू की बजाय झुनझुना, पंखा या अन्य खिलौना न खरीद सकती थी? पूरा क्या तोलकर देने की बात कहना नन्हीं उम्र में आवश्यक था। जब कि वह केवल एक

उसका यह सब डायलाग सुनकर मुझे ख्याल आया कि सब लोग जो फोटोग्राफर कहता है वही करते हैं क्योंकि कहीं फोटो खराब न आवे, पर संत महात्मा हमें नित्य उपदेश देते हैं कि ऐसा करो, ऐसा मत करो, पर हम उनकी बातों पर ध्यान नहीं देते। क्या वे फोटोग्राफर से कम श्रेणी के हैं? ध्यान रहे जैसा कहते हैं वैसा न किया तो निश्चित ही परभव में रोनी सूरत बनेगी।

सोया हुआ शेर

शेर सो गया। आसपास घूमती हुई चींटी शेर के पैर पर चढ़ गई तथा इधर-उधर घूमने लगी। बस फिर क्या था; उड़ती हुई मक्खी भी पेट पर आ बैठी तथा गादीनुमा बालों का आनन्द लेने लगी। चींटी तथा मक्खी की हिम्मत देखकर खर-गोश ने भी आगे आने की हिम्मत की तथा शेर के मुंह के बिल-कुल पास खड़ा हो गया। खरगोश अभिमान की नजर से शेर को देखने लगा मानो उसकी हंसी उड़ा रहा हो। हिरन भी चरता चरता वहाँ आ गया तथा खरगोश को शेर के बिलकुल पास खड़ा देखकर खुद भी उसके पेट के सहारे सुस्ताने लगा।

जिस शेर की एक दहाड़ से शक्तिशाली हाथी भी जंगल में दूर दूर भागते दिखाई देते हैं उसी शेर के आसपास इस प्रकार इन छोटे मोटे जीवों को देखकर निश्चित ही आश्चर्य होता था पर इस सबका एक ही कारण था कि शेर सो रहा था।

हमारा आत्मा रूपी शेर भी सो रहा है। यही कारण है कि क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष रूपी जीव इस पर हावी हो गये हैं। यदि आत्मारूपी शेर जाग जावे तो फिर हमें भी महावीर बनने में देर न लगे।

उसका यह सब डायलाग सुनकर मुझे ख्याल आया कि सब लोग जो फोटोग्राफर कहता है वही करते हैं क्योंकि कहीं फोटो खराब न आवे, पर संत महात्मा हमें नित्य उपदेश देते हैं कि ऐसा करो, ऐसा मत करो, पर हम उनकी बातों पर ध्यान नहीं देते। क्या वे फोटोग्राफर से कम श्रेणी के हैं? ध्यान रहे जैसा कहते हैं वैसा न किया तो निश्चित ही परभव में रोनी सूरत बनेगी।

सोया हुआ शेर

शेर सो गया। आसपास घूमती हुई चींटी शेर के पैर पर चढ़ गई तथा इधर-उधर घूमने लगी। बस फिर क्या था; उड़ती हुई मक्खी भी पेट पर आ बैठी तथा गादीनुमा बालों का आनन्द लेने लगी। चींटी तथा मक्खी की हिम्मत देखकर खरगोश ने भी आगे आने की हिम्मत की तथा शेर के मुंह के बिलकुल पास खड़ा हो गया। खरगोश अभिमान की नजर से शेर को देखने लगा मानो उसकी हंसी उड़ा रहा हो। हिरन भी चरता चरता वहाँ आ गया तथा खरगोश को शेर के बिलकुल पास खड़ा देखकर खुद भी उसके पेट के सहारे सुस्ताने लगा।

जिस शेर की एक दहाड़ से शक्तिशाली हाथी भी जंगल में दूर दूर भागते दिखाई देते हैं उसी शेर के आसपास इस प्रकार इन छोटे मोटे जीवों को देखकर निश्चित ही आश्चर्य होता था पर इस सबका एक ही कारण था कि शेर सो रहा था।

हमारा आत्मा रूपी शेर भी सो रहा है। यही कारण है कि क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष रूपी जीव इस पर हावी हो गये हैं। यदि आत्मारूपी शेर जाग जावे तो फिर हमें भी महावीर बनने में देर न लगे।

था। सोचा इसे आधी साड़ी की ही जरूरत होगी। दस रुपये दे दीजिये साहब।

तिरुवल्लुवर का नुकसान करने के बाद भी वह क्रोधित नहीं हुआ, यह देखकर उस युवक ने उसे हानि पहुंचाने का मन में निश्चय किया। उसने पुनः उस आधी साड़ी के दो टुकड़े कर दिये तथा एक टुकड़ा हाथ में लेकर कीमत पूछने लगा।

इसका मूल्य ५ रुपये साहब, तिरुवल्लुवर ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया। पुनः चौथाई टुकड़े के दो टुकड़े करते हुए उस युवक ने दाम पूछे तो तिरुवल्लुवर ने कहा—२॥ रुपया। अपनी हार से खीज कर वह युवक साड़ी के टुकड़े करता गया तथा तिरुवल्लुवर हिसाब से कीमत बताता गया। अपनी साड़ी के तार-तार देखकर उस सन्त आत्मा को थोड़ा भी क्रोध नहीं आया। उस युवक ने जब परीक्षा में तिरुवल्लुवर को डिगते न देखा तो वह पैरों में पड़ कर क्षमा की भीख मांगने लगा और कहा कि—आपको थोड़ा-सा भी मुझ पर क्रोध नहीं आया अपितु आप बराबर सरलता तथा नम्रता से प्रतिउत्तर देते रहे। यह लीजिये साड़ी के २० रुपये। तिरुवल्लुवर ने उसे समझाते हुए कहा—तुम ये २० रुपये देकर क्या मेरी हानि पूरी करना चाहते हो?

भाई! कुदरत के जितने भी तत्व इस साड़ी को इस रूप तक लाने में खर्च हुए, उन सब की कीमत केवल २० रुपये? इसे कई व्यक्तियों ने अपने हाथों से तैयार कर अपने श्रम द्वारा कला का परिचय दिया, क्या उसकी कीमत २० रुपये?

युवक नीचा सिर किये सुन रहा था। युवक की आंखें

था। सोचा इसे आधी साड़ी की ही जरूरत होगी। दस रुपये दे दीजिये साहब।

तिरुवल्लुवर का नुकसान करने के बाद भी वह क्रोधित नहीं हुआ, यह देखकर उस युवक ने उसे हानि पहुंचाने का मन में निश्चय किया। उसने पुनः उस आधी साड़ी के दो टुकड़े कर दिये तथा एक टुकड़ा हाथ में लेकर कीमत पूछने लगा।

इसका मूल्य ५ रुपये साहब, तिरुवल्लुवर ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया। पुनः चौथाई टुकड़े के दो टुकड़े करते हुए उस युवक ने दाम पूछे तो तिरुवल्लुवर ने कहा—२॥ रुपया। अपनी हार से खीज कर वह युवक साड़ी के टुकड़े करता गया तथा तिरुवल्लुवर हिसाब से कीमत बताता गया। अपनी साड़ी के तार-तार देखकर उस सन्त आत्मा को थोड़ा भी क्रोध नहीं आया। उस युवक ने जब परीक्षा में तिरुवल्लुवर को हिलते न देखा तो वह पैरों में पड़ कर क्षमा की भीख मांगने लगा और कहा कि—आपको थोड़ा-सा भी मुझ पर क्रोध नहीं आया अपितु आप बराबर सरलता तथा नम्रता से प्रति-उत्तर देते रहे। यह लीजिये साड़ी के २० रुपये। तिरुवल्लुवर ने उसे समझाते हुए कहा—तुम ये २० रुपये देकर क्या मेरी हानि पूरी करना चाहते हो?

भाई! कुदरत के जितने भी तत्त्व इस साड़ी को इस रूप तक लाने में खर्च हुए, उन सब की कीमत केवल २० रुपये? इसे कई व्यक्तियों ने अपने हाथों से तैयार कर अपने श्रम द्वारा कला का परिचय दिया, क्या उनकी कीमत २० रुपये?

युवक नीचा सिर किये सुन रहा था। युवक की आंखों

है ? दुनिया भर का सोना तेरे घर में कैसे समा सकेगा ? हां, मैं तुझे यह शक्ति प्रदान करता हूं कि तू जिसे भी हाथ लगावेगा वह सोना बन जावेगा।' महात्मा चले गये। घर की चौखट को सेठ ने हाथ लगाया तो सोने की हो गई। महात्मा के वरदान में सच्चाई पाकर उसे बहुत खुशी हुई। पर ज्योंहि उसने अपनी लड़की से पानी पीने के लिये मांगा तो क्या देखता है कि हाथ में लेते ही पानी सोना होकर जम गया तथा लोटा भी सोने का हो गया। उसे लड़की पर क्रोध आया तो उसे एक तमाचा लगा दिया। ज्योंहि सेठ का हाथ लड़की पर गया त्योंहि लड़की भी सोने की हो गयी। अब तो सेठ बड़ा घबड़ाया। महात्मा की झोपड़ी पर जाकर रोने लगा तथा माफी मांगी कि अब मैं लालच नहीं करूंगा। आप अपना वरदान वापस ले लें। महात्मा को तो उसे शिक्षा ही देना थी। अतः अपनी माया समेट ली। सच है लालची मनुष्य निश्चित ही गड्ढे में गिरता है। सन्तोषी सदा सुखी !

दो लघु कथाएं

१—बात उन दिनों की है जब मनुष्य में मनुष्यता थी तथा वह श्रम से शरमाता नहीं था। उसने जंगल में जाकर सुबह से शाम तक लकड़ी काटी। शाम को जब वह घर की ओर चलने लगा तो लकड़ी का गट्ठर भी उसके पीछे पीछे चलने लगा।

इस प्रकार कई दिन बीत गये। एक दिन मनुष्य ने सोचा आज तक मेरी अक्ल में यह बात क्यों नहीं आई कि जब मैं जंगल से वापस घर आता हूं तो पैदल क्यों आता हूं। मुझे

है ? दुनिया भर का सोना तेरे घर में कैसे समा सकेगा ? हां, मैं तुझे यह शक्ति प्रदान करता हूं कि तू जिसे भी हाथ लगावेगा वह सोना बन जावेगा।' महात्मा चले गये। घर की चौखट को सेठ ने हाथ लगाया तो सोने की हो गई। महात्मा के वरदान में सच्चाई पाकर उसे बहुत खुशी हुई। पर ज्योंहि उसने अपनी लड़की से पानी पीने के लिये मांगा तो क्या देखता है कि हाथ में लेते ही पानी सोना होकर जम गया तथा लोटा भी सोने का हो गया। उसे लड़की पर क्रोध आया तो उसे एक तमाचा लगा दिया। ज्योंहि सेठ का हाथ लड़की पर गया त्योंहि लड़की भी सोने की हो गयी। अब तो सेठ बड़ा घबड़ाया। महात्मा की झोपड़ी पर जाकर रोने लगा तथा माफी मांगी कि अब मैं लालच नहीं करूंगा। आप अपना वरदान वापस ले लें। महात्मा को तो उसे शिक्षा ही देना थी। अतः अपनी माया समेट ली। सच है लालची मनुष्य निश्चित ही गड्ढे में गिरता है। सन्तोषी सदा सुखी !

दो लघु कथाऐं

१—बात उन दिनों की है जब मनुष्य में मनुष्यता थी तथा वह श्रम से शरमाता नहीं था। उसने जंगल में जाकर सुबह से शाम तक लकड़ी काटी। शाम को जब वह घर की ओर चलने लगा तो लकड़ी का गट्ठर भी उसके पीछे पीछे चलने लगा।

इस प्रकार कई दिन बीत गये। एक दिन मनुष्य ने सोचा आज तक मेरी अक्ल में यह बात क्यों नहीं आई कि जब मैं जंगल से वापस घर आता हूं तो पैदल क्यों आता हूं। मुझे

अर्थ का अनर्थ

नई आई हुई वहु को पहले तो सास ने कुछ दिन तक घर का कोई काम नहीं बताया पर कुछ दिन वीतने के बाद उसे कहा कि सुवह उठकर सवसे पहले अपने सोने के कमरे का कचरा निकालना तथा आदमी देखकर खिड़की से कचरा नीचे फेंक देना बाद में कमरा वन्द कर बेठक के कमरे में आना। दूसरे दिन जब सुवह एक वजे तक भी वहु बंठक के कमरे में न आई तो सास उसे देखने गयी। सास ने देखा कि बहु हाथ में कचरा लिये खिडकी के पास खडी है। सास ने कहा कि अभी तक बंठक के कमरे में नहीं आई वहु, तो बहु ने कहा कि कोई आदमी आवे तो कचरा फेंकू अभी तक कोई आदमी आया नहीं।

किसी नीति वाक्य का कोई दुरुपयोग करे वह निश्चित ही कठिनाइयों को आमन्त्रण देगा। पर जो वात का सही अर्थ लगाकर श्रेष्ठ कर्म करेंगे वे निश्चित ही अपना कल्याण सहज में कर सकेंगे।

—◆—

सत्यवादी मायावी नाई

सेठ और नाई की जरा सी वात पर अनवन हो गई। रोज रोज आने वाले नाई को सेठ ने अब कभी भी हवेली पर न आनेका हुक्म सुना दिया। नाई अपमान का घूंट पीकर अपने घर आ गया पर बदला लेने की वात मन में पक्की जम गयी।

अर्थ का अनर्थ

नई आई हुई वहु को पहले तो सास ने कुछ दिन तक घर का कोई काम नहीं वताया पर कुछ दिन बीतने के बाद उसे कहा कि सुवह उठकर सबसे पहले अपने सोने के कमरे का कचरा निकालना तथा आदमी देखकर खिड़की से कचरा नीचे फेंक देना बाद में कमरा बन्द कर बेठक के कमरे में आना। दूसरे दिन जब सुवह एक बजे तक भी वहु वंठक के कमरे में न आई तो सास उसे देखने गयी। सास ने देखा कि वहु हाथ में कचरा लिये खिडकी के पास खडी है। सास ने कहा कि अभी तक वैठक के कमरे में नहीं आई वहु, तो वहु ने कहा कि कोई आदमी आवे तो कचरा फेंकू अभी तक कोई आदमी आया नहीं।

किसी नीति वाक्य का कोई दुरुपयोग करे वह निश्चित ही कठिनाइयों को आमन्त्रण देगा। पर जो बात का सही अर्थ लगाकर श्रेष्ठ कर्म करेंगे वे निश्चित ही अपना कल्याण सहज में कर सकेंगे।

—◆—

सत्यवादी मायावी नाई

सेठ और नाई की जरा सी वात पर अनवन हो गई। रोज रोज आने वाले नाई को सेठ ने अब कभी भी हवेली पर न आनेका हुक्म सुना दिया। नाई अपमान का घूंट पीकर अपने घर आ गया पर वदला लेने की वात मन में पक्की जम गयी।

माया का जाल फैलाने वाला झूठ तो नहीं बोलता पर शब्द जाल में फंसाता है। क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार में एक माया भी एक कषाय है जो आत्मा को डुबाने का काम करती है। आत्मा यदि तिरती है तो दान, शील, तप, भावना से। अतः हमें माया से सदैव बचना चाहिए।

माया भय ठगिनी हम जानी

—●—

मोह और संयम

किशोरावस्था में नेपोलियन को एक नाई के यहां दिन बिताने पड़े। नाई के छोटे मोटे काम में नेपोलियन हाथ बटांता तथा बाकी समय नाई के घर पर पुस्तकें पढ़ने में बिताता। नेपोलियन एक सुन्दर जवान था, अतः नाई की पत्नी उस पर मोहित हो गयी। वह हर प्रकार से प्रयत्न करती कि नेपोलियन उसकी ओर आकर्षित हो, पर नेपोलियन तो एक अलग ही प्रकार की मिट्टी का बना हुवा था वह अपनी आंखें पुस्तकों के पन्नों में गड़ाये रखता था।

और दिन बीते। वर्षों बाद नेपोलियन देश का प्रधान सेनापति बन गया। किसी कार्य से उसे फिर आकलानी गांव में आना पड़ा। नेपोलियन उस नाई की दुकान पर भी मिलने गया। वहां नाई की पत्नी बैठी थी। नेपोलियन ने उससे पूछा- आपके यहां कुछ वर्षों पहले नेपोलियन नाम का एक किशोर रहता था?

नाई की पत्नी को नेपोलियन का नाम सुनते ही क्रोध

माया का जाल फैलाने वाला झूठ तो नहीं बोलता पर शब्द जाल में फंसाता है। क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार में एक माया भी एक कषाय है जो आत्मा को डुबाने का काम करती है। आत्मा यदि तिरती है तो दान, शील, तप, भावना से। अत: हमें माया से सदैव बचना चाहिए।

माया भय ठगिनी हम जानी

—●—

मोह और संयम

किशोरावस्था में नेपोलियन को एक नाई के यहां दिन बिताने पड़े। नाई के छोटे मोटे काम में नेपोलियन हाथ बटांत तथा बाकी समय नाई के घर पर पुस्तकें पढ़ने में बिताता। नेपोलियन एक सुन्दर जवान था, अत: नाई की पत्नी उस पर मोहित हो गयी। वह हर प्रकार से प्रयत्न करती कि नेपोलियन उसकी ओर आकर्षित हो, पर नेपोलियन तो एक अलग ही प्रकार की मिट्टी का बना हुवा था वह अपनी आंखें पुस्तकों के पन्नों में गड़ाये रखता था।

और दिन बीते। वर्षों बाद नेपोलियन देश का प्रधान सेनापति बन गया। किसी कार्य से उसे फिर आकलानी गांव में आना पड़ा। नेपोलियन उस नाई की दुकान पर भी मिलने गया। वहां नाई की पत्नी बैठी थी। नेपोलियन ने उससे पूछा- आपके यहां कुछ वर्षों पहले नेपोलियन नाम का एक किशोर रहता था?

नाई की पत्नी को नेपोलियन का नाम सुनते ही क्रोध

आप दोनों भूतकाल जानने की इच्छा से आई हैं, महात्मा ने कहा। आप दोनों का अभी का जीवन भी बहुत कुछ अंशों में समान है। रानी और वेश्या हो तो क्या ?

दोनों के पास कई दासियां हैं, दोनों के पास बड़ा आलीशान मकान है, दोनों के पास नई-नई डिजाईन के गहने हैं, कपड़े हैं, और दोनों को दूर-दूर के लोग जानते हैं। दोनों के भोजन में भी मिष्ठान और पकवान की होड लगी रहती है।

तुम दोनों बहने थीं, पूर्व भव में। एक सम्पन्न सेठ की सुपुत्रियां राजरानी जो आज हैं वह थी—बड़ी बहन। दोनों शादी के एक-एक दो-दो साल बाद हो गई थी, विधवा।

बड़ी बहन शुरू से ही रही अनुशासन में, उस पर जरूरत न पड़ी अंकुश की। वह व्रत, उपवास करती, गुरुजनों की सेवा करती तथा अपना समय धर्म ग्रंथों के पढ़ने में बिताती और छोटी बहन जो थी वह स्वच्छन्द रहना पसन्द करती थी, उसे अनुशासन की परवाह न थी। वह दिन-रात पढ़ती कहानियां—किस्सों की किताबे, करती रहती 'हा-हा ही-ही' और खाने-पीने, मोज, शोक में समय बिताती।

माता-पिता ने समझाया। कुल की मर्यादा का कराया भान, तो फिर अंकुश में लगी रहने। व्रत, उपवास भी करती तो जबरन। बड़े-बूढ़ों की सेवा करती तो दस बार कहने पर। कुछ समय बाद धर्म-ध्यान में अपना मन लगाना शुरू किया पर अपना कर्तव्य समझा कम दूसरों के लादे हुए विचार समझ ज्यादा।

दिन भर कुछ भी न मिलने पर भिखारी भूखा रहता है पर उसे उपवास का फल नहीं मिलता। वह सब मजबूरी में करता है। छोटी बहन ने भी सब जबरन किया इस लिये तुम वेश्या बनी।

आप दोनों भूतकाल जानने की इच्छा से आई हैं, महात्मा ने कहा। आप दोनों का अभी का जीवन भी बहुत कुछ अंशों में समान है। रानी और वैश्या हो तो क्या ?

दोनों के पास कई दासियां हैं, दोनों के पास बड़ा आलीशान मकान है, दोनों के पास नई-नई डिजाईन के गहने हैं, कपड़े हैं, और दोनों को दूर-दूर के लोग जानते हैं। दोनों के भोजन में भी मिष्ठान और पकवान की होड लगी रहती है।

तुम दोनों बहनें थीं, पूर्व भव में। एक सम्पन्न सेठ की सुपुत्रियां राजरानी जो आज हैं वह थी—बड़ी बहन। दोनों शादी के एक-एक दो-दो साल बाद हो गई थी, विधवा।

बड़ी बहन शुरू से ही रही अनुशासन में, उस पर जरूरत न पड़ी अंकुश की। वह व्रत, उपवास करती, गुरुजनों की सेवा करती तथा अपना समय धर्म ग्रथों के पढ़ने में बिताती और छोटी बहन जो थी वह स्वच्छन्द रहना पसन्द करती थी, उसे अनुशासन की परवाह न थी। वह दिन-रात पढ़ती कहानियां—किस्सों की किताबे, करती रहती 'हा-हा ही-ही' और खाने-पीने, मौज, शोक में समय बिताती।

माता-पिता ने समझाया। कुल की मर्यादा का कराया भान, तो फिर अंकुश में लगी रहने। व्रत, उपवास भी करती तो जबरन। बड़े-बूढ़ों की सेवा करती तो दस बार कहने पर। कुछ समय बाद धर्म-ध्यान में अपना मन लगाना शुरू किया पर अपना कर्तव्य समझा कम दूसरों के लादे हुए विचार समझ कर ज्यादा।

दिन भर कुछ भी न मिलने पर भिखारी भूखा रहता है पर उसे उपवास का फल नहीं मिलता। वह सब मजबूरी में करता है। छोटी बहन ने भी सब जबरन किया इस लिये तुम वैश्या बनी।

विदेश से आई दवा

सेठ का लड़का बीमार हुआ तो डाक्टर ने हालत गम्भीर-तम बताते हुए विदेश से दवाई जहाज से शीघ्र से शीघ्र मंगाने को कहा, सेठ ने अपने दामाद को भेजकर शीघ्र दवा लेकर आने को बोल दिया।

इधर सेठ के यहां जो नौकरानी आती थी उसके दो साल के लड़के को भी वही बीमारी हो गई। बेचारी गरीब व असहाय क्या कर सकती थी ?

दवा लेकर दामाद पहुँचा तब तक सेठ के लड़के ने दम तोड़ दिया अतः वह दवा गरीब नौकरानी के लड़के के काम आयी। लड़का अच्छा हो गया।

पुण्य पाप का खेल बड़ा अजीब होता है। पुण्य उदय हो तो गरीब के लड़के के लिये दवा हवाई जहाज से आ जाती है जबकि पाप का उदय हो तो लाख प्रयत्न करनें पर भी संकट टलता नहीं।

—●—

बेईमानी का इनाम

सेठजी बीमार हो गये। डाक्टर की दुकान का बोर्ड देख कर भीतर घुस गये। दो दरवाजे देखकर सोचा किधर जाऊं। एक पर मानसिक, दूसरे पर शारीरिक लिखा था। शारीरिक वाले दरवाजे में घुसे तो भीतर फिर दो दरवाजे मिले। डाक्टर था ही नहीं। एक पर लिखा था आपरेशन दूसरे पर लिखा था दवाई।

विदेश से आई दवा

सेठ का लड़का बीमार हुआ तो डाक्टर ने हालत गम्भीर-तम बताते हुए विदेश से दवाई जहाज से शीघ्र से शीघ्र मंगाने को कहा, सेठ ने अपने दामाद को भेजकर शीघ्र दवा लेकर आने को बोल दिया।

इधर सेठ के यहां जो नौकरानी आती थी उसके दो साल के लड़के को भी वही बीमारी हो गई। बेचारी गरीब व अस-हाय क्या कर सकती थी ?

दवा लेकर दामाद पहुँचा तब तक सेठ के लड़के ने दम तोड़ दिया अतः वह दवा गरीब नौकरानी के लड़के के काम आयी। लड़का अच्छा हो गया।

पुण्य पाप का खेल बड़ा अजीब होता है। पुण्य उदय हो तो गरीब के लड़के के लिये दवा हवाई जहाज से आ जाती है जबकि पाप का उदय हो तो लाख प्रयत्न करनें पर भी संकट टलता नहीं।

—●—

बेईमानी का इनाम

सेठजी बीमार हो गये। डाक्टर की दुकान का बोर्ड देख कर भीतर घुस गये। दो दरवाजे देखकर सोचा किधर जाऊं। एक पर मानसिक, दूसरे पर शारीरिक लिखा था। शारीरिक वाले दरवाजे में घुसे तो भीतर फिर दो दरवाजे मिले। डाक्टर था ही नहीं। एक पर लिखा था आपरेशन दूसरे पर लिखा था दवाई।

पत्नी का पश्चाताप

शादी हो गई थी उसकी। शादी के कुछ दिनों बाद एक दिन सुबह अपनी पत्नी से बोला—रात सपने में मुझे दो हजार रुपये मिले ! पत्नी तुनक मिजाज ही नहीं मूर्ख भी अव्वल नम्बर की थी। चिल्ला कर बोली तुम्हारे जैसा सन्तोषी मैंने आज तक नहीं देखा। सपना भी देखा तो दो हजार का। यदि दस हजार का देखते तो तुम्हारा क्या बिगड़ जाता । आगे जाकर बाल-बच्चों की शादियां भी करनी पड़ेगी। अच्छा, आगे क्या हुआ ?

क्या होना था वह बोला—आंख खुल गई । बस इतना कहना था कि वह तो बरस पड़ी पति पर । बोली अभी तक जीवन में कुछ किया है आपने। खाना और सोना । अरे उन रुपयों की आंख खुलने के पहले बैंक में तो जमा करा दिये होते कह कर पश्चाताप करने लगी।

हम भी स्वप्नवत् संसार में सपना ही तो देख रहे हैं नींद ले रहे हैं। रुपये, पत्नी, शादियां, कुटुम्ब। आंख खुलने वाली है। आंख खुलने पर सब कुछ गायब, सपने की तरह।

—०—

अनासक्ति का मार्ग

सेठ करोड़ीमल की नई हवेली बनकर तैयार हो गई तो सेठ ने उसके उद्घाटन का कार्यक्रम रखा। हवेली सजाई गई। पत्तों से तोरन द्वार बनाये गये। नेताजी उद्घाटन करने आये। कोठी के बाहर की सड़क सभी निमंत्रितों से खचाखच भरी

पत्नी का पश्चाताप

शादी हो गई थी उसकी। शादी के कुछ दिनों वाद एक दिन सुवह अपनी पत्नी से वोला—रात सपने में मुझे दो हजार रुपये मिले ! पत्नी तुनक मिजाज ही नहीं मूर्ख भी अव्वल नम्वर की थी। चिल्ला कर वोली तुम्हारे जैसा सन्तोषी मैंने आज तक नहीं देखा। सपना भी देखा तो दो हजार का। यदि दस हजार का देखते तो तुम्हारा क्या विगड़ जाता । आगे जाकर वाल-वच्चों की शादियां भी करनी पड़ेगी। अच्छा, आगे क्या हुआ ?

क्या होना था वह वोला—आंख खुल गई । वस इतना कहना था कि वह तो वरस पड़ी पति पर । वोली अभी तक जीवन में कुछ किया है आपने। खाना और सोना । अरे उन रुपयों को आंख खुलने के पहले वैंक में तो जमा करा दिये होते कह कर पश्चाताप करने लगी।

हम भी स्वप्नवत् संसार में सपना ही तो देख रहे हैं नींद ले रहे हैं। रुपये, पत्नी, शादियां, कुटुम्व। आंख खुलने वाली है। आंख खुलने पर सव कुछ गायव, सपने की तरह।

—०—

अनासक्ति का मार्ग

सेठ करोड़ीमल की नई हवेली वनकर तैयार हो गई तो सेठ ने उसके उद्घाटन का कार्यक्रम रखा। हवेली सजाई गई। पत्तों से तोरन द्वार वनाये गये। नेताजी उद्घाटन करने आये। कोठी के वाहर की सड़क सभी निमंत्रितों से खचाखच भरी

राजा साहब जो कि भेष बदल कर आये हुए थे, ने कहा—चलो तुम मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें तुम्हारे इच्छित स्थान पर छोड़ देता हूं ।

लक्ष्मी मेहतरानी थी तथा वह राजा के महल में सफाई करती थी। जब राजा साहब ने आगन्तुक युवक से बातचीत में यह पक्का जान लिया कि यह उसी लक्ष्मी का दामाद है तो राजा साहब ने लक्ष्मी के घर जाकर आवाज लगाई-लक्ष्मीबाई।

कौन है भाई, लक्ष्मी ने दरवाजा खोलते हुए पूछा तथा बाहर राजा साहब को घोड़े की लगाम थामे तथा दामाद को घोड़े पर बैठा देख कर राजा साहब के पैरों में गिर गई तथा बोली—आपने यह क्या किया अन्नदाता ! आप पैदल और....
अरे मैं राजा तो बाद में बना लक्ष्मी, पहले तो इन्सान बना—राजा साहब ने बात काटते हुए कहा–मनुष्य हूं तो मनुष्यता तो मुझ में कायम रहना ही चाहिये, लक्ष्मी। जानते हो ये राजा साहब कौन थे ? ये थे जम्मू काश्मीर के महाराजा प्रतापसिंहजी।

—●—

बोल हृदय परिवर्तन का

लड़की खेलकूद कर घर में वापस आई तब तक अंधेरा हो गया था। बाल स्वभाव के कारण उसे अंधेरा अच्छा नहीं लगा। शिकायत के स्वर में वह पिताजी से बोली शाम हो गयी और अभी तक आपने दिया ही नहीं लगाया। बात कही तो लड़की ने पिता से, पर सुनली कृष्णचन्द्रसिंहजीने। कृष्णचन्द्रसिंहजी में लगभग सभी दुर्गुण थे। शिकारी, शराबी, विलासी और भी

राजा साहब जो कि भेष बदल कर आये हुए थे, ने कहा—चलो तुम मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें तुम्हारे इच्छित स्थान पर छोड़ देता हूं ।

लक्ष्मी मेहतरानी थी तथा वह राजा के महल में सफाई करती थी। जब राजा साहब ने आगन्तुक युवक से बातचीत में यह पक्का जान लिया कि यह उसी लक्ष्मी का दामाद है तो राजा साहब ने लक्ष्मी के घर जाकर आवाज लगाई-लक्ष्मीबाई।

कौन है भाई, लक्ष्मी ने दरवाजा खोलते हुए पूछा तथा बाहर राजा साहब को घोड़े की लगाम थामे तथा दामाद को घोड़े पर बैठा देख कर राजा साहब के पैरों में गिर गई तथा बोली—आपने यह क्या किया अन्नदाता ! आप पैदल और.... अरे मैं राजा तो बाद में बना लक्ष्मी, पहले तो इन्सान बना—राजा साहब ने बात काटते हुए कहा—मनुष्य हूं तो मनुष्यता तो मुझ में कायम रहना ही चाहिये, लक्ष्मी। जानते हो ये राजा साहब कौन थे ? ये थे जम्मू काश्मीर के महाराजा प्रतापसिंहजी।

—●—

बोल हृदय परिवर्तन का

लड़की खेलकूद कर घर में वापस आई तब तक अंधेरा हो गया था। बाल स्वभाव के कारण उसे अंधेरा अच्छा नहीं लगा। शिकायत के स्वर में वह पिताजी से बोली शाम हो गयी और अभी तक आपने दिया ही नहीं लगाया। बात कही तो लड़की ने पिता से, पर सुनली कृष्णचन्द्रसिंहजीने। कृष्णचन्द्रसिंहजी में लगभग सभी दुर्गुण थे। शिकारी, शराबी, विलासी और भी

ससुर धक्का जमाई मुक्का

सौराष्ट्र के एक सेठ का लड़का बंगाल में पढ़ता था। वहां पर उसने अपनी बहन की सगाई पिता की आज्ञा लेकर एक महपाठी से कर दी। सगाई के दस्तूर के लिये वर को मुहूर्त पर आने के लिये तार दिया। सेठ का लड़का अपने घर मुहूर्त से २-३ दिन पहले ही आ गया। सेठ आस-पास के बड़े शहरों में जाकर सगाई के लिये आवश्यक सामान लेकर अपने घर लौट रहा था। रास्ते में जंक्शन पर घर के लिये रेल बदली। रेल में बहुत भीड़ थी। किसी तरह सामान लेकर डिब्बे के अन्दर जाकर बैठ गया। कलकत्ता की ओर से मेल आया, उसके यात्री भी डिब्बों में जगह देखकर बैठने लगे। सेठ के डिब्बे में भी जब एक युवक ने घुसने की कोशिश की तो फाटक पर ही सेठ ने युवक को धक्का देते हुए क्रोध में दो-चार बातें सुना दी। युवक भी कब मानने वाला था। उसने भी 'टिकिट लिया है और रेल किसी के बाप की नहीं है' आदि-आदि बातें सुना दीं एवं हाथ उठाया। जब युवक डिब्बे में घुस गया तो १०-२० मिनिट बाद शांति हुई। अड़ोस-पड़ोस में एक दूसरे का परिचय पूछा तो सेठ को मालूम हुआ कि ये तो होने वाले जमाईजी हैं। युवक को तथा सेठ को बड़ी शर्म महसूस हुई। एक-दूसरे से माफी मांगी। बिना जानकारी के ये सब होता है। धर्म की जानकारी के बिना मनुष्य भी उसे ढकोसला समझता है। पर जब जानकारी हो जावे तो उसे सम्मान की दृष्टि से देखता है तथा आत्मसात कर उन्नत जीवन बनाता है।

—*—

ससुर धक्का जमाई मुक्का

सौराष्ट्र के एक सेठ का लड़का बंगाल में पढ़ता था। वहाँ र उसने अपनी वहन की सगाई पिता की आज्ञा लेकर एक हपाठी से कर दी। सगाई के दस्तूर के लिये वर को मुहूर्त पर ाने के लिये तार दिया। सेठ का लड़का अपने घर मुहूर्त से -३ दिन पहले ही आ गया। सेठ आस-पास के बड़े शहरों में ाकर सगाई के लिये आवश्यक सामान लेकर अपने घर ौट रहा था। रास्ते में जंक्शन पर घर के लिये रेल वदली। ल में बहुत भीड़ थी। किसी तरह सामान लेकर डिब्बे के अन्दर जाकर वैठ गया। कलकत्ता की ओर से मेल आया, उसके ात्री भी डिब्बों में जगह देखकर वैठने लगे। सेठ के डिब्बे में भी जव एक युवक ने घुसने की कोशिश की तो फाटक पर ही ेठ ने युवक को धक्का देते हुए क्रोध में दो-चार बातें सुना ी। युवक भी कब मानने वाला था। उसने भी 'टिकिट लिया है और रेल किसी के बाप की नहीं है' आदि-आदि बातें सुना दीं एवं हाथ उठाया। जब युवक डिब्बे में घुस गया तो १०-२० मिनिट वाद शांति हुई। अड़ोस-पड़ोस में एक दूसरे का परिचय पूछा तो सेठ को मालूम हुआ कि ये तो होने वाले जमाईजी हैं। युवक को तथा सेठ को बड़ी शर्म महसूस हुई। एक-दूसरे से माफी मांगी। विना जानकारी के ये सब होता है। धर्म की जानकारी के बिना मनुष्य भी उसे ढकोसला समझता है। पर जब जानकारी हो जावे तो उसे सम्मान की दृष्टि से देखता है तथा आत्मसात कर उन्नत जीवन बनाता है।

मृत्युलोक में आने के बाद जब उसने दूसरे प्राणियों को सुन्दर स्वरूप में देखा तो उसे अपने आप में घृणा होने लगी। पर अब क्या हो सकता था। उसने एक सिद्ध पुरुष से पूछा कि मैं पश्चाताप की आग में जल रहा हूं। कोई एक ऐसा उपाय बताओ जिससे मुझ में भी कोई एक बहुत बड़ा आदर्श सद्गुण आ जावे। उस महापुरुष ने ऊंट से कहा कि लोग तो कांटे बोते हैं पर तू उन कांटों को खाकर संसार से कांटों का खातमा करना। ऊंट यह उपदेश सुनकर खुश हुवा तथा उसने उस पर अमल करना शुरू कर दिया।

मनुष्य भी ऊंट जैसा ही प्राणी है। उसमें कई अवगुण हैं। वह राग द्वेष तथा कषायों से घिरा हुआ है तथा वह लोगों के अवगुण देखते रहता है।

परन्तु मनुष्य भी यदि महापुरुषों के उपदेशों पर अमल करे तो वह भी कांटे बोने के काम बंद करके दूसरे प्राणियों की सुख सुविधा के काम कर सकता है। प्राणी मात्र पर दया के भाव रखकर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

—※—

जागते रहो

वह सिनेमा देखकर अभी-अभी लौटा था। बिस्तर पर लेटा ही था कि आंख लग गई। तभी घड़ी ने एक बजाया। सड़क पर चौकीदार ने सीटी बजाई तथा जोर से बोला—"जागते रहो।"

तेज आवाज के कारण उसकी नींद टूट गई। उसे चौकीदार पर बड़ा गुस्सा आया। वह करवट बदल कर पुनः खुर्राटे लेने

मृत्युलोक में आने के बाद जब उसने दूसरे प्राणियों को सुन्दर स्वरूप में देखा तो उसे अपने आप में घृणा होने लगी। पर अब क्या हो सकता था। उसने एक सिद्ध पुरुष से पूछा कि मैं पश्चाताप की आग में जल रहा हूं। कोई एक ऐसा उपाय बताओ जिससे मुझ में भी कोई एक बहुत बड़ा आदर्श सद्गुण आ जावे। उस महापुरुष ने ऊंट से कहा कि लोग तो कांटे बोते हैं पर तू उन कांटों को खाकर संसार से कांटों का खातमा करना। ऊंट यह उपदेश सुनकर खुश हुवा तथा उसने उस पर अमल करना शुरू कर दिया।

मनुष्य भी ऊंट जैसा ही प्राणी है। उसमें कई अवगुण हैं। वह राग द्वेष तथा कषायों से घिरा हुआ है तथा वह लोगों के अवगुण देखते रहता है।

परन्तु मनुष्य भी यदि महापुरुषों के उपदेशों पर अमल करे तो वह भी कांटे बोने के काम बंद करके दूसरे प्राणियों की सुख सुविधा के काम कर सकता है। प्राणी मात्र पर दया के भाव रखकर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

—※—

जागते रहो

वह सिनेमा देखकर अभी-अभी लौटा था। बिस्तर पर लेटा ही था कि आंख लग गई। तभी घड़ी ने एक बजाया। सड़क पर चौकीदार ने सीटी बजाई तथा जोर से बोला—"जागते रहो।"

तेज आवाज के कारण उसकी नींद टूट गई। उसे चौकीदार पर बड़ा गुस्सा आया। वह करवट बदल कर पुनः खुर्राटे लेने

का तय कर दर्जी के पास गया। शादी विवाह की तिथियां पास होने से तथा दर्जी के पास अत्यधिक काम होने से उसने अपनी मजबूरी बताई। शहर में पुराना दर्जी और कोई न था जो अंगरखा सी सके। मोहन ने दो चार बार कहा तो दर्जी को क्रोध आ गया। बोला जा जा तेरे जैसे यहां कई आते हैं। मेरे जैसा अभी तक कोई आया नहीं नतीजा अच्छा नहीं होगा मोहन ने कहा। अच्छा होकर के क्या है ? क्या तू मुझे यहाँ से निकलवा देगा, दर्जी ने गुस्से में कहा। हां-हां शहर से भी निकाल दूंगा। 'याद रखना मेरा नाम मोहन नाटक वाला है' मोहन ने कहा।

मोहन सराय में आया जहां मण्डली ठहरी हुई थी, और कमरे में घुसकर ड्रामा लिखने लगा। दर्जी दर्जन का झगड़ा नामक ड्रामा के डायलॉग लगभग दो घण्टे में पूरा कर शाम को ऐलान करने भेज दिया कि आज रात को हमारा मशहूर ड्रामा दर्जी दर्जन का झगड़ा देखिये। जनता की सिफारिश पर आज के खेल के टिकिट दर में भी कंसेशन किया है। बस फिर क्या था ? लोग रात को ड्रामा देखने जमा हो गये। दर्जी और दर्जन ने भी टिकिट खरीदे तथा हाल में जाकर बैठ गये।

ड्रामा शुरू हुआ। जैसे-जैसे ड्रामा के सीन आगे बढ़ते जाते थे वैसे-वैसे लोगों को खूब मजा आ रहा। कई लोग तो दर्जी और दर्जन की तरफ देखकर हंस भी रहे थे दर्जी और दर्जन बड़े अपमानित हुवे वहाँ से उठकर घर आये तथा अपना सामान इकट्ठा कर शहर छोड़कर भाग जाने की तैयारी की।

जिस जिसकी शादी के कपड़े दर्जी के पास सीने के लिये थे वे लोग ज्योंही दर्जी दर्जन उठे उसके पीछे हो लिये क्योंकि उन्हें शंका हो गयी थी कि जलील हो जाने से कहीं ये भाग न जायें।

का तय कर दर्जी के पास गया। शादी विवाह की तिथियां पास होने से तथा दर्जी के पास अत्यधिक काम होने से उसने अपनी मजबूरी बताई। शहर में पुराना दर्जी और कोई न था जो अंगरखा सी सके। मोहन ने दो चार बार कहा तो दर्जी को क्रोध आ गया। बोला जा जा तेरे जैसे यहां कई आते हैं। मेरे जैसा अभी तक कोई आया नहीं नतीजा अच्छा नहीं होगा मोहन ने कहा। अच्छा होकर के क्या है ? क्या तू मुझे यहाँ से निकलवा देगा, दर्जी ने गुस्से में कहा। हां-हां शहर से भी निकाल दूंगा। 'याद रखना मेरा नाम मोहन नाटक वाला है' मोहन ने कहा।

मोहन सराय में आया जहां मण्डली ठहरी हुई थी, और कमरे में घुसकर ड्रामा लिखने लगा। दर्जी दर्जन का झगड़ा नामक ड्रामा के डायलॉग लगभग दो घण्टे में पूरा कर शाम को ऐलान करने भेज दिया कि आज रात को हमारा मशहूर ड्रामा दर्जी दर्जन का झगड़ा देखिये। जनता की सिफारिश पर आज के खेल के टिकिट दर में भी कंसेशन किया है। बस फिर क्या था ? लोग रात को ड्रामा देखने जमा हो गये। दर्जी और दर्जन ने भी टिकिट खरीदे तथा हाल में जाकर बैठ गये।

ड्रामा शुरू हुआ। जैसे-जैसे ड्रामा के सीन आगे बढ़ते जाते थे वैसे-वैसे लोगों को खूब मजा आ रहा। कई लोग तो दर्जी और दर्जन की तरफ देखकर हंस भी रहे थे दर्जी और दर्जन बड़े अपमानित हुवे वहाँ से उठकर घर आये तथा अपना सामान इकट्ठा कर शहर छोड़कर भाग जाने की तैयारी की।

जिस जिसकी शादी के कपड़े दर्जी के पास सीने के लिये थे वे लोग ज्योंही दर्जी दर्जन उठे उसके पीछे हो लिये क्योंकि उन्हें शंका हो गयी थी कि जलील हो जाने से कहीं ये भाग न जायें।

तो क्या देखता है सेठ तथा सेठानी दोनों सोये नहीं हैं । आपस में बातचीत कर रहे हैं । लड़की बड़ी होने से दोनों चिंतित थे तथा लड़के वाले सब जगह बहुत ज्यादा दहेज थे अत: उन्होंने निश्चित किया कि इसकी शादी किसी साधु से तय कर दे क्योंकि साधु बड़े सन्तोषी होते हैं और वहां बड़े दहेज की जरूरत नहीं पड़ेगी । चोर ने जब यह बात सुनी तो वहां से उल्टे पैर लौट गया तथा घर आकर साधु जैसा भेष बनाकर सेठ की हवेली से थोड़ी दूर पर एक मैदान में पूजापाट का सामान लगाकर बैठ गया ।

सुबह सेठ जब दुकान पर जा रहा था तो नये आये साधु को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ । उसे रात की सेठानी की बात याद आ गई तथा साधु के पास जाकर बोला महाराज पाय लागू । आप दूसरों के दुख दूर करते हैं मेरा भी संकट दूर करो । मेरी लड़की है । शादी करना है । आपके साथ शादी कर दूंगा और मेरी हैसियत के अनुसार अच्छा मालमत्ता भी दूंगा । सेठ की बात सुनकर साधु बने चोर ने पहले तो हां भरने की सोची पर बाद में विचार करने लगा कि मैं केवल दो चार घण्टे से साधु बना हूं । साधु बनने पर राहगीर तो क्या सेठ साहुकार भी सिर झुकाते हैं तथा मेरा जो धन पाने का संसारी लक्ष्य था उसे पूरा करते हैं तो यदि मैं भेष का मान रखकर कनक कामिनी से साधु की तरह दूर रहूं तो मुझे यहां भी सुख मिलेगा तथा परभव में भी मुझे सुख मिलेगा ।

यह सोचकर वह ढोंगी साधु बना चोर सच्चा साधु बन गया । इस प्रकार जीवन को उन्नत बनाया ।

—※—

तो क्या देखता है सेठ तथा सेठानी दोनों सोये नहीं हैं। आपस में बातचीत कर रहे हैं। लड़की बड़ी होने से दोनों चिंतित थे तथा लड़के वाले सब जगह बहुत ज्यादा दहेज थे अतः उन्होंने निश्चित किया कि इसकी शादी किसी साधु से तय कर दे क्योंकि साधु बड़े सन्तोषी होते हैं और वहां बड़े दहेज की जरूरत नहीं पड़ेगी। चोर ने जब यह बात सुनी तो वहां से उल्टे पैर लौट गया तथा घर आकर साधु जैसा भेष बनाकर सेठ की हवेली से थोड़ी दूर पर एक मैदान में पूजापाठ का सामान लगाकर बैठ गया।

सुबह सेठ जब दुकान पर जा रहा था तो नये आये साधु को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसे रात को सेठानी की बात याद आ गई तथा साधु के पास जाकर बोला महाराज पाय लागू। आप दूसरों के दुख दूर करते हैं मेरा भी संकट दूर करो। मेरी लड़की है। शादी करना है। आपके साथ शादी कर दूंगा और मेरी हैसियत के अनुसार अच्छा मालमत्ता भी दूंगा। सेठ की बात सुनकर साधु बने चोर ने पहले तो हां भरने की सोची पर बाद में विचार करने लगा कि मैं केवल दो चार घण्टे से साधु बना हूं। साधु बनने पर राहगीर तो क्या सेठ साहुकार भी सिर झुकाते हैं तथा मेरा जो धन पाने का संसारी लक्ष्य था उसे पूरा करते हैं तो यदि मैं भेष का मान रखकर कनक कामिनी से साधु की तरह दूर रहूं तो मुझे यहां भी सुख मिलेगा तथा परभव में भी मुझे सुख मिलेगा।

यह सोचकर वह ढोंगी साधु बना चोर सच्चा साधु बन गया। इस प्रकार जीवन को उन्नत बनाया।

—*—

पर बिना हिले डुले लेट गया। राजा के नौकर ने तोते को मरा जानकर राजा की आज्ञा से राजा के सामने पीजड़े से बाहर निकाल कर दूर जाकर फेंकने की तैयारी की त्योंही तोता यह कहता हुआ उड़ गया कि मुक्ति का यही रास्ता है। देखो मैं मुक्त हो गया।

राजा ने इस सारी घटना पर बड़ी अच्छी तरह ध्यान लगाया तथा यह समझ गये कि यदि मुक्ति पाना है तो संसार रूपी पींजड़े में इस प्रकार रहना चाहिये मानो हम इसमें हैं ही नहीं।

—+—

तीरथराम से १३ सवाल

पाठशाला के छात्रों की वार्षिक परीक्षा चालू थी। तीरथराम भी छात्रों में से एक थे। प्रश्न पत्र में १३ सवाल दिये गये थे पर हल करना था केवल ९ प्रश्न। तीरथराम ने तो रात दिन मेहनत की थी। ज्ञानोपार्जन के लिये पाठशाला में आये थे तो ज्ञान प्राप्ति के काम को महत्व दिया गया था। १३ प्रश्नों के जवाब देने में तीरथराम की पूरी पूरी तैयारी थी। सभी प्रश्नों के जवाब मानों उनकी जबान पर चक्कर काट रहे थे। किसे लिखूं, किसे छोड़ूं इसकी समझ तीरथराम को नहीं आ रही थी। तेरह ही प्रश्नों के जवाब लिख दिये तीरथराम ने और आगे लिख दिया किन्हीं ९ प्रश्नों के जवाब जांच कर कृपया अंक दे दीजिये। परीक्षक अद्भुत बुद्धि वाले इस छात्र के द्वारा लिखे गये जवाब पढ़ कर आश्चर्य चकित रह गया। सभी जवाब बराबर थे। पूरे अंक मिले। अपनी श्रेणी में तीरथराम सर्वोपरि छात्र माने गये। इस प्रकार की बुद्धि वाले तीरथराम ही तो आगे चलकर रामतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुए। ज्ञानोपार्जन कर रहे छात्र यदि तीरथराम की तरह पढ़ाई के काम को महत्व देकर अन्य बातों की ओर ध्यान न दें तो स्वामी रामतीर्थ की श्रेणी में आने में उन्हें

पर बिना हिले डुले लेट गया । राजा के नौकर ने तोते को मरा जानकर राजा की आज्ञा से राजा के सामने पींजड़े से बाहर निकाल कर दूर जाकर फेंकने की तैयारी की त्योंही तोता यह कहता हुआ उड़ गया कि मुक्ति का यही रास्ता है । देखो मैं मुक्त हो गया ।

राजा ने इस सारी घटना पर बड़ी अच्छी तरह ध्यान लगाया तथा यह समझ गये कि यदि मुक्ति पाना है तो संसार रूपी पींजड़े में इस प्रकार रहना चाहिये मानो हम इसमें हैं ही नहीं ।

—+—

तीरथराम से १३ सवाल

पाठशाला के छात्रों की वार्षिक परीक्षा चालू थी । तीरथराम भी छात्रों में से एक थे । प्रश्न पत्र में १३ सवाल दिये गये थे पर हल करना था केवल ९ प्रश्न । तीरथराम ने तो रात दिन मेह-नत की थी । ज्ञानोपार्जन के लिये पाठशाला में आये थे तो ज्ञान प्राप्ति के काम को महत्व दिया गया था । १३ प्रश्नों के जवाब देने में तीरथराम को पूरी पूरी तैयारी थी । सभी प्रश्नों के जवाब मानों उनकी जबान पर चक्कर काट रहे थे । किसे लिखूं, किसे छोड़ूं इसकी समझ तीरथराम को नहीं आ रही थी । तेरह ही प्रश्नों के जवाब लिख दिये तीरथराम ने और आगे लिख दिया किन्हीं ९ प्रश्नों के जवाब जांच कर कृपया अंक दे दीजिये । परी-क्षक अद्भुत बुद्धि वाले इस छात्र के द्वारा लिखे गये जवाब पढ़ कर आश्चर्य चकित रह गया । सभी जवाब बराबर थे । पूरे अंक मिले । अपनी श्रेणी में तीरथराम सर्वोपरि छात्र माने गये । इस प्रकार की बुद्धि वाले तीरथराम ही तो आगे चलकर रामतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुए । ज्ञानोपार्जन कर रहे छात्र यदि तीरथ-राम की तरह पढ़ाई के काम को महत्व देकर अन्य बातों की ओर ध्यान न दें तो स्वामी रामतीर्थ की श्रेणी में आने में उन्हें

स्टेशन आ रहा है

रेल की मुसाफिरी, मेल की मुसाफिरी
स्टेशन छोटे, नहीं रुकी गाड़ी
तेज है प्यास लगी और की भूख लगी
हुआ पछतावा, साथ कुछ लिया नहीं
चाल धीमी हुई, स्टेशन कोई आ रहा
बोला एक साथी, ले लेना माग पूड़ी
काम बड़े काज बड़े, धन्धा व्यापार बड़ा
फुरसत जराभी नहीं, धरमकाज सूझे नहीं
भूख प्यास गिने नहीं, रात दिन सुने नहीं
चाल धीमी हुई, अब कुछ फिकर हुई
नर भव अनमोल था, सफल बनाया नहीं
साथी ने बताया पर्व है आ रहा
त्याग, क्षमा, तप धार मंजिल सरल बना जरा

क्यों छाने तू गली गली

क्यों भटके तू भीड़ भाड़ में
क्यों छाने तू गली गली ।
अपने ही भीतर जो झांके
मिल जावेगी राह भली
देख दूसरों के दुख को तू
दूर करने का करे जतन
धर्म फूल खिलजावे मन में
निश्चित पावें श्रेष्ठ रतन ।

जग में जीना नहीं जानता

मानव तोड़े चांद सितारे
पहुँचे मंगल चांद पर
जग में जीना नहीं जानता
जीना कैसे इस ध्यान धर
कोमलता से हृदय भरा हो
सरल बना हो जीवन क्रम
निश्चय स्वर्ग मोक्ष को पावे
मिट जावे सब संकट भ्रम

स्टेशन आ रहा है

रेल की मुसाफिरी, मेल की मुसाफिरी
स्टेशन छोटे, नहीं रुकी गाड़ी
तेज है प्यास लगी जोर की भूख लगी
हुआ पछतावा, साथ कुछ लिया नहीं
चाल धीमी हुई, स्टेशन कोई आ रहा
बोला एक साथी, ले लेना माग पूड़ी
काम बड़े काज बड़े, धन्धा व्यापार बड़ा
फुरसत जराभी नही, धरमकाज सूझे नहीं
भूख प्यास गिने नहीं, रात दिन सुने नहीं
चाल धीमी हुई, अब कुछ फिकर हुई
नर भव अनमोल था, सफल बनाया नहीं
साथी ने बताया पर्व है आ रहा
त्याग, क्षमा, तप धार मंजिल सरल बना जरा

क्यों छाने तू गली गली

क्यों भटके तू भीड़ भाड़ में
क्यों छाने तू गली गली।
अपने ही भीतर जो झांके
मिल जावेगी राह भली
देख दूसरों के दुख को तू
दूर करने का करे जतन
धर्म फूल खिलजावे मन में
निश्चित पावे श्रेष्ठ रतन।

जग में जीना नहीं जानता

मानव तोड़े चांद सितारे
पहुँचे मंगल चांद पर
जग में जीना नहीं जानता
जीना कैसे इस ध्यान धर
कोमलता से हृदय भरा हो
सरल बना हो जीवन क्रम
निश्चय स्वर्ग मोक्ष को पावे
मिट जावे सब संकट भ्रम

क्षमा करो हे क्षमावीर

नर हूँ पर नर के सद्गुण से,
लाखों कोसों दूर रहा।
शुद्ध भावना पूर्ण ज्ञान से,
अब तक सदा अपूर्ण रहा ॥

जानबूझ कर भी मैंने,
धर्म-विरुद्ध व्यवहार किया।
झूठ कपट का लिया सहारा,
विचरण हो स्वच्छन्द किया ॥

वशीभूत हो क्रोध मान के,
जब भी किया बुरा व्यवहार।
क्षमा हेतु अब खड़ा द्वार पर
अपने दोनों हाथ पसार ॥

बढ़े सुमार्ग पर

उच्चजाति का अश्व यदि कभी, हो जावे उन्मुक्त।
पाते ही संकेत लगाम का, मार्ग गहे उपयुक्त ॥

संयम पथ से यदि विचलित हो, साधु मन वच काय से।
सम्यकविधि से संभले जल्दी, पुनः बढ़े सुमार्ग पे ॥

क्षमा करो हे क्षमावीर

नर हूँ पर नर के सद्गुण से,
लाखों कोसों दूर रहा।
शुद्ध भावना पूर्ण ज्ञान से,
अब तक सदा अपूर्ण रहा॥

जानबूझ कर भी मैंने,
धर्म-विरुद्ध व्यवहार किया।
झूठ कपट का लिया सहारा,
विचरण में स्वच्छन्द किया॥

वशीभूत हो क्रोध मान के,
जब भी किया बुरा व्यवहार।
क्षमा हेतु अब खड़ा द्वार पर
अपने दोनों हाथ पसार॥

बढ़े सुमार्ग पर

उच्चजाति का अश्व यदि कभी, हो जावे उन्मुक्त।
पाते ही संकेत लगाम का, मार्ग गहे उपयुक्त॥

संयम पथ से यदि विचलित हो, साधु मन वच काय से।
सम्यकविधि से संभले जल्दी, पुनः बढ़े सुमार्ग पे॥

..म का कल्याण हो

सभी चाहे कल्याण हो
हमारे समाज का
पर आगे बढ़ने की धुन में
कोई नहीं देखता
पीछे मुड़कर
अपना इतिहास
क्या थे और क्या हो गये
बनो धन की मौज में
परिग्रह में सुख भरे
नकल करें सबही
चाहे न हो घर में
थाली लोटा दरी ही
अनगिनती संस्थाएं
करती प्रयत्न हैं
सुखी हो सब समाज
पर माने नहीं एक भी
कहे कुछ करे कुछ
आडम्बर में भूले सब
लेखा जोखा देखे कोई
कुरीतियों के अम्बार का
छोटे क्या बड़े क्या
पुरुष क्या महिला क्या
भूले सब विनयादि गुण
डूबे सब मान में
सरलता संतोष तो
रेत का दीवार बनी
फैशन और ढोंग का
साम्राज्य बढ़ा चढ़ा
जल्दी सोना जल्दी उठना
भूल गये पाठ सब
शिक्षा की दीक्षा से
युवा दिशा भ्रम हुआ
बुरी बुरी आदतों में
घिरता ही चला गया
पिता जैन माता जैन
इसी से कहाते जैन
वीर की सन्तान पर
माने कहां उपदेश उनके
स्वतंत्रता बदली स्वच्छंदता में
गुणों की पूछ नहीं
अर्थ के चक्कर में
हर कोई चाहे
बनना करोड़पति
पर श्रम से परहेज करे
फूट डाल जमाना चाहे
रोब, कैसे कल्याण हो
एकता की भावना का
भूल गये पाठ सब
एक एक बात प्रभु वीर की
मानों नहीं जब तक
सच्चे नागरिक या
श्रावक नहीं बनोगे कभी ☐

..ज का कल्याण हो

सभी चाहे कल्याण हो
हमारे समाज का
पर आगे बढ़ने की धुन में
कोई नहीं देखता
पीछे मुड़कर
अपना इतिहास
क्या थे और क्या हो गये
धनी धन की मौज में
परिग्रह में सुख भरते
नकल करें सबही
चाहे न हो घर में
थाली लोटा दरी ही
अनगिनती संस्थाएं
करती प्रयत्न हैं
सुखी हो सब समाज
पर माने नहीं एक भी
कहे कुछ करे कुछ
आडम्बर में भूले सब
लेखा जोखा देखे कोई
कुरीतियों के अम्बार का
छोटे क्या बड़े क्या
पुरुष क्या महिला क्या
भूले सब विनयादि गुण
डुबे सब मान में
सरलता संतोष तो
रेत की दीवार बनी
फैशन और ढोंग का
साम्राज्य बढ़ा चढ़ा
जल्दी सोना जल्दी उठना
भूल गये पाठ सब
शिक्षा की दीक्षा से
युवा दिशा भ्रम हुआ
बुरी बुरी आदतों में
धिरता ही चला गया
पिता जैन माता जैन
इसी से कहाते जैन
वीर की सन्तान पर
माने कहां उपदेश उनके
स्वतंत्रता बदली स्वच्छंदता में
गुणों की पूछ नहीं
अर्थ के चक्कर में
हर कोई चाहे
बनना करोड़पति
पर श्रम से परहेज करे
फूट डाल जमाना चाहे
रोब, कैसे कल्याण हो
एकता की भावना का
भूल गये पाठ सब
एक एक बात प्रभु वीर की
मानों नहीं जब तक
सच्चे नागरिक या
श्रावक नहीं बनोगे कभी ☐

नित की सेवा से घबरावे
भक्ति से जो रहता दूर
गुरुजनों की बात न माने
जिन पर छाया हो मगरूर
पाप श्रमण वह है समझो।

अहिंसा से दूर रहे जो
करता हिंसा के सब काज
हो काया की विराधना में
जिसे न आवे रत्ति लाज
पाप श्रमण वह है समझो।

पाटा आसन पूंजे बिन ही
जो करता उनका उपयोग
जीव जन्तु मकड़ी आदि का
हनन करे जो निःसंकोच
पाप श्रमण वह है समझो

जोर जोर से चले राह पर
आलस में जो समय बितावे
क्रोधी और प्रमादी जो हो
अन्य जीव पर दया न लावे
पाप श्रमण वह है समझो।

इधर उधर निज वस्तु रखता
प्रति लेखन की करे न याद
बातों में जो ध्यान रख नित
प्रति लेखन में करे प्रमाद
पाप श्रमण वह है समझो

नित की सेवा से घबरावे
भक्ति से जो रहता दूर
गुरुजनों की बात न माने
जिस पर छाया हो मगरूर
पाप श्रमण वह है समझो।

अहिंसा से दूर रहे जो
करता हिंसा के सब काज
हो काया की विराधना में
जिसे न आवे रत्ति लाज
पाप श्रमण वह है समझो।

पाटा आसन पूंजे बिन ही
जो करता उनका उपयोग
जीव जन्तु मकड़ी आदि का
हनन करे जो निःसंकोच
पाप श्रमण वह है समझो

जोर जोर से चले राह पर
आलस में जो समय बितावे
क्रोधी और प्रमादी जो हो
अन्य जीव पर दया न लावे
पाप श्रमण वह है समझो।

इधर उधर निज वस्तु रखता
प्रति लेखन की करे न याद
बातों में जो ध्यान रख नित
प्रति लेखन में करे प्रमाद
पाप श्रमण वह है समझो

माल मसाले की चीजें खा
दूध दही प्रिय भोजन करता
रूखा सूखा गले न उतरे
तप से सदा दूर जो भगता
पाप श्रमण वह है समझो।

शाम रात्री का ध्यान न रखकर
बड़ी देर तक खाता रहता
झूंठी तर्क दलीलो से जो
जनता को भरमाता रहता
पाप श्रमण वह है समझो।

गुरू को तो वह गुरू नहीं माने
पाखंडी का साथ करे
पाप कर्म में वन सहयोगी
दल वदले नहीं शरम करे
पाप श्रमण वह है समझो।

निज घर तो छोड़ा साधू ने
पर-घर पर जोर जमाता है
अनुचित कामों में रत रहकर
जो जरा नहीं शरमाता है
पाप श्रमण वह है समझो।

घर घर की भिक्षा से वचकर
किसी एक घर खाता है
संसारी के आसन शैया पर
अपना समय विताता है
पाप श्रमण वह है समझो। □

माल मसाले की चीजें खा
दूध दही प्रिय भोजन करता
रूखा सूखा गले न उतरे
तप से सदा दूर जो भगता
पाप श्रमण वह है समझो।

शाम रात्री का ध्यान न रखकर
बड़ी देर तक खाता रहता
झूंठी तर्क दलीलो से जो
जनता को भरमाता रहता
पाप श्रमण वह है समझो।

गुरू को तो वह गुरू नहीं माने
पाखंडी का साथ करे
पाप कर्म में बन सहयोगी
दल बदले नहीं शरम करे
पाप श्रमण वह है समझो।

निज घर तो छोड़ा साधू ने
पर-घर पर जोर जमाता है
अनुचित कामों में रत रहकर
जो जरा नहीं शरमाता है
पाप श्रमण वह है समझो।

घर घर की भिक्षा से बचकर
किसी एक घर खाता है
संसारी के आसन शैया पर
अपना समय बिताता है
पाप श्रमण वह है समझो। □

लेखक परिचय—

वहुमुखी व्यक्तित्व के धनी

श्री मोतीलाल सुराना

यदि आप सम्पूर्ण मानवीय गुणों के दर्शन एक ही व्यक्तित्व में एक साथ करना चाहते हैं तो आपको इन्दौर नगर के समाज सेवी श्री मोतीलालजी सुराना के जीवन को निहारना होगा। सादा जीवन उच्च विचार का साकार रूप श्री सुरानाजी में कई विशेषताओं का अद्भुत समागम हुवा है। आपने सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में विगत अर्ध शताब्दी पूर्व से जो सेवा का कीर्तिमान स्थापित किया वह समाज सेवकों के लिए निश्चय ही आदर्श व प्रेरणास्पद है।

रामपुरा श्री सुरानाजी की जन्मभूमि है तो इन्दौर आपकी कर्मभूमि रहा है। २१ जून १९१६ के शुभ दिन माता वसंतीबाई (पंडित मरण प्राप्त) की कुक्षी से आपका जन्म हुवा तथा पिता स्व. दृढ़ धर्मी सुश्रावक श्री हेमराजजी सुराना का वरद-हस्त एवं मार्गदर्शन हमेशा ही आपके साथ रहा। माता-पिता के सुसंस्कारों का ही सुपरिणाम है कि आपके जीवन में वाणी और आचरण के बीच गहरा सामजस्य दिखाई देता है।

श्री सुरानाजी जीवन के शिल्पी हैं। कई सामाजिक संस्थाओं ने आपकी निःस्वार्थ सेवाओं को प्राप्त कर अपने को धन्य माना है। त्याग सयम, सौम्यता, सरलता व निस्पृहता आपके जीवन के सफल सोपान हैं। खादी की सादी वेशभूषा, चेहरे पर सहज मुस्कान और विनम्रता पूर्वक करबद्द अभिवादन से युक्त आपकी छवी सामने वाले व्यक्ति के मन में अपार श्रद्धा उत्पन्न कर देती है। गृहस्थ जीवन के उत्तरदायित्व को निभाते हुवे आप कीचड़ में कमलवत उससे निर्लिप्त रहते हैं।

सन १९३२ से आपका व्यवसायिक सेवा क्षेत्र प्रारम्भ होता है रामपुरा देवास, अमृतसर व इन्दौर की पचासों धार्मिक व सामाजिक

लेखक परिचय—

बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी

श्री मोतीलाल सुराना

यदि आप सम्पूर्ण मानवीय गुणों के दर्शन एक ही व्यक्तित्व में एक साथ करना चाहते हैं तो आपको इन्दौर नगर के समाज सेवी श्री मोतीलालजी सुराना के जीवन को निहारना होगा। सादा जीवन उच्च विचार का साकार रूप श्री सुरानाजी में कई विशेषताओं का अद्भुत समागम हुवा है। आपने सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में विगत अर्ध शताब्दी पूर्व से जो सेवा का कीर्तिमान स्थापित किया वह समाज सेवकों के लिए निश्चय ही आदर्श व प्रेरणास्पद है।

रामपुरा श्री सुरानाजी की जन्मभूमि है तो इन्दौर आपकी कर्मभूमि रहा है। २१ जून १९१६ के शुभ दिन माता बसंतीबाई (पंडित मरण प्राप्त) की कुक्षी से आपका जन्म हुवा तथा पिता स्व. दृढ़ धर्मी सुश्रावक श्री हेमराजजी सुराना का वरद-हस्त एवं मार्गदर्शन हमेशा ही आपके साथ रहा। माता-पिता के सुसंस्कारों का ही सुपरिणाम है कि आपके जीवन में वाणी और आचरण के बीच गहरा सामजस्य दिखाई देता है।

श्री सुरानाजी जीवन के शिल्पी हैं। कई सामाजिक संस्थाओं ने आपकी निःस्वार्थ सेवाओं को प्राप्त कर अपने को धन्य माना है। त्याग संयम, सौम्यता, सरलता व निस्पृहता आपके जीवन के सफल सोपान हैं। खादी की सादी वेशभूषा, चेहरे पर सहज मुस्कान और विनम्रता पूर्वक करबद्द अभिवादन से युक्त आपकी छवी सामने वाले व्यक्ति के मन में अपार श्रद्धा उत्पन्न कर देती है। गृहस्थ जीवन के उत्तरदायित्व को निभाते हुवे आप कीचड़ में कमलवत उससे निर्लिप्त रहते हैं।

सन १९३२ से आपका व्यवसायिक सेवा क्षेत्र प्रारम्भ होता है रामपुरा देवास, अमृतसर व इन्दौर की पचासों धामिक व सामाजि

व्यावृत्त्युल्लेखानन्तरमेव विशेषणत्वबुद्धिः । तदाहुराचार्याः — 'सदसद्वा समानाधिकरणं व्यवच्छेदकं विशेषणम्, व्यधिकरणमुपलक्षणम्' इति । अस्यार्थः स्वाधिकरणमात्रवृत्तिव्यावृत्तिबोधकत्वं स्वावच्छिन्नाधिकरणताकव्यावृत्तिबोधकत्वं स्वानधिकरणाधिकरणकव्यावृत्त्यबोधकत्वे सति व्यावृत्तिबोधकत्वं वेति । उपलक्षणं तु स्वानधिकरणेऽपि व्यावृत्तिं बोधयति ।

अथवा विवक्षितान्वयप्रतियोगितावच्छेदकं विशेषणम् । दण्डिनमानयेत्यादौ दण्डस्तथा । तदनवच्छेदकमुपलक्षणम्, काकेन देवदत्तस्य

प्रकाशः

दण्डिधीर्विशेष्यांशे अदण्डव्यावृत्तिका च । एवं च काकजटादेरप्यकाकजटादिव्यावृत्तिबोधे विशेषणत्वमेव । [1]अदेवदत्तगृहादिव्यावृत्तिबोधे चोपलक्षणत्वम् ।

नन्वेवं [2]व्यावर्तकत्वमेवास्तु, प्रतियोग्यवृत्तिधर्मज्ञानस्य [3]व्यावृत्तधीहेतुतया [4]प्रतियोगितावच्छेदकाभावस्यैव व्यावर्तकत्वं न तु काकादेरप्यदेवदत्तगृहव्यावृत्तिबोधकत्वम्, मानाभावात् । तथा च सत्यन्तवैयर्थ्यमिति चेत्—

मैवम् । व्यावृत्तिधीप्रयोजकस्यैव व्यावर्तकत्वेनोक्तत्वात् । देवदत्तगृहत्वादिविशेषणपरिचायकत्वेन काकादेरपि तथात्वात् । न हि दण्डिधीरपि साक्षाद्दण्डव्यावृत्तधीकारणम् । अधिकरणज्ञानानुपलब्ध्यादितद्धीसामग्रीसत्त्वे प्रतियोग्यवृत्तिधर्मग्रहं विना तद्धीविलम्बाभावात् । अपि तु प्रतियोगितावच्छेदकानुपलम्भसंपादकतया परंपरया, दण्डवत्त्वेनोपलम्भे अदण्डवत्त्वोपलम्भाभावादित्याहुः ।

नन्विदं व्यावृत्तिगर्भं विशेषणत्वं तदनुल्लेखे विशिष्टबुद्धौ न भासेतेत्यत आह — व्यावृत्त्युल्लेखेति । विशेषणत्वं विशिष्टधीविषय एव न, यदि वा विषयस्तदा वैशिष्ट्यप्रतियोगित्वरूपं तदिति भावः । समानाधिकरणमिति । प्रत्यासत्त्या स्वार्थसमानाधिकरणमित्यर्थः । यथाश्रुते तस्यातिव्याप्तिरेव स्यादिति । तत्र वि-माह — अस्यार्थ इति । स्वाधिकरणदेशकालमात्रवृत्तिव्यावृत्तिबोधकत्वं स्वाधि-

---

1. ग. देवदत्त-
2. ख. व्यावर्तकमेवास्तु
3. ग. व्यावृत्तधीहेतुतया
4. ग. 'प्रतियोगिता ... मानाभावात्' इति ग्रन्थस्त्रुटितः ।